चतुर्भुज नाट्य साहित्य

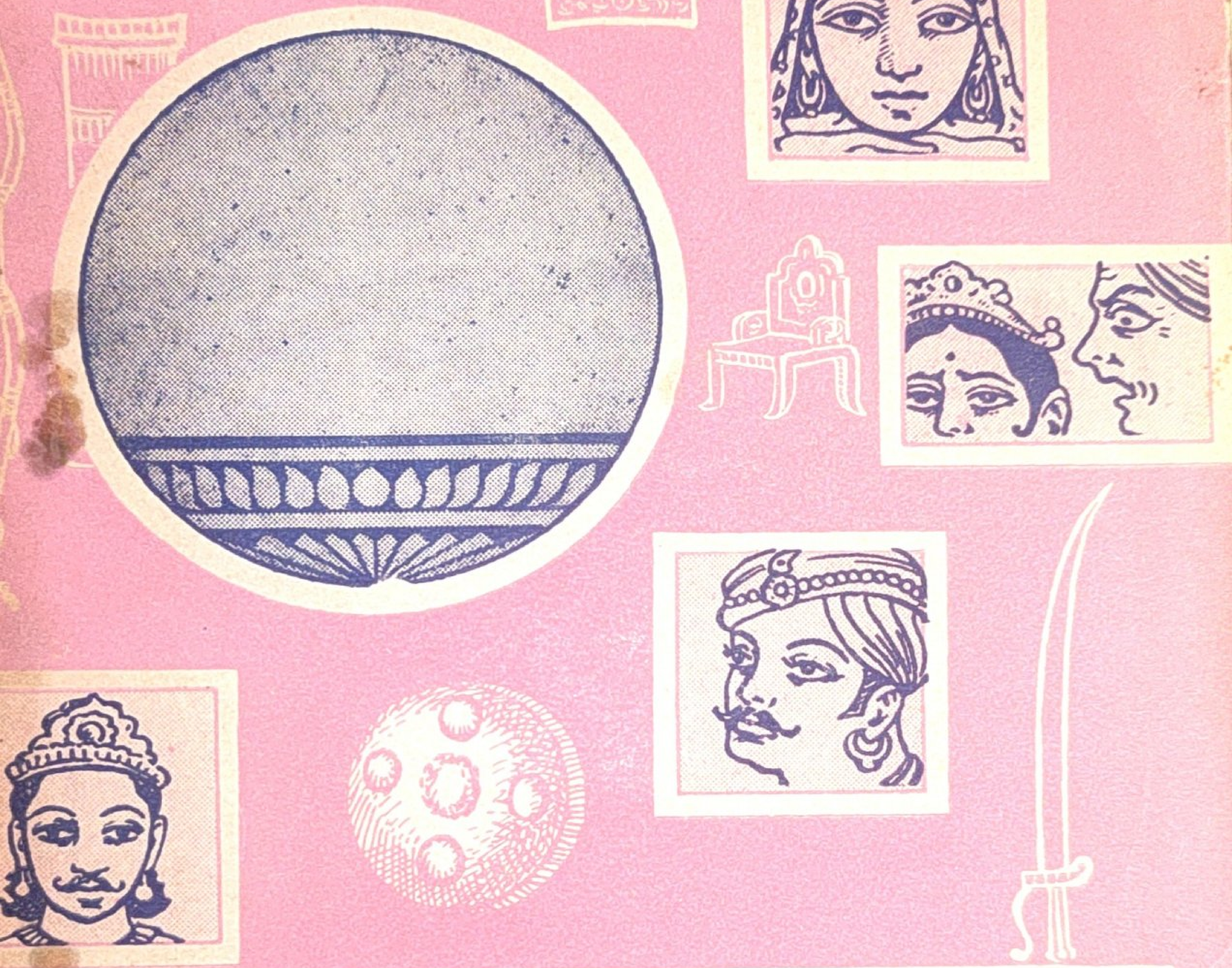

मीरकासिम

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

मीरकासिम

[ऐतिहासिक नाटक]

लेखक

चतुर्भुज, एम० ए०

वितरक

प्रसाद बुक एजेन्सी

खचाँची रोड

पटना-८००००४

संस्करण—अक्टूबर १९७८ ई०

मूल्य : मूल्य ५.०० मात्र

सर्वाधिकार (C) प्रकाशकाधीन

मुद्रक
माणिक प्रेस
नयाटोला,
पटना—८००००४

अपनी बात

हिन्दी-युग होने पर भी आज रंगमंचीय नाटकों का विकास नहीं हो पा रहा है। साहित्यकारों और रंगमंच के कलाकारों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

हिन्दी के प्रसिद्ध नाट्यकार और कलाकार स्व० शिवराम दास 'गुप्त' की प्रेरणा से यह नाटक लिखा गया था। उन्होंने ऐतिहासिक मसाले भी दिये थे। किन्तु खेद है कि वे इसका प्रकाशित रूप नहीं देख सके। इस नाटक के गीत डा० परमानन्द के बनाये हुए हैं। मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

'मीरकासिम' में ऐतिहासिक तथ्यों की रक्षा करने की पूर्ण चेष्टा की गयी है, फिर भी नाटकीय सौन्दर्य को रखने के लिए सौम्बर, हुसैन, नसीम जैसे चरित्रों की सृष्टि करनी पड़ी। कहीं-कहीं कथानक भी ठीक करना पड़ा।

इतिहास कहता है कि मीरकासिम जिस समय नवाब हुए उस समय अँगरेजों और फ्रांसीसियों में अनबन थी। इस नाटक में दोनों पक्षों की कूटनीति के दर्शन होते हैं।

इतिहासज्ञों को नाटक के अन्तिम दृश्य पर आपत्ति हो सकती है। सन् १७६४ ई० के बक्सर-युद्ध के पश्चात् मीरकासिम के विषय में इतिहास निश्चित रूप से कुछ नहीं बतलाता। कुछ लोगों का मत है कि मीरकासिम पराजित होकर लापता हो गये। नाटक का सफल अन्त शायद इससे नहीं होता। इसी से मैंने कल्पना द्वारा मीरकासिम का युद्ध करते हुए अन्त और आडम्स द्वारा पश्चाताप दिखला कर यवनिका पतन कराया है। नाटक सर्वप्रथम काफी तैयारी के साथ मेरे निर्देशन में अभिनीत हुआ और इस दृश्य का अच्छा प्रभाव मैंने दर्शकों पर पाया।

—चतुर्भुज

मीरकासिम

पात्र-परिचय और अभिनय की प्रथम रजनी के कलाकार

पुरुष

मीरकासिम—बंगाल, बिहार और उड़ीसा के नवाब : राणा राजेन्द्र
मीरजाफर—पदच्युत नवाब : जयनन्दन प्र० सिन्हा
तकी खाँ— } नवाब के सेनापतिगण : मो० युनुस
ईरजा खाँ— : मो० हफीज
हुसैन खाँ— : कन्हैया लाल
गुरगन खाँ (ग्रिगरी) : पी० डी० वर्मा
पिट्रूस—गुरगन का भाई, अँगरेजों का जासूस : दिनेश प्रसाद
सौम्बर—फ्रेंच डाकू; पीछे नवाब का सेनापति : चतुर्भुज (लेखक)
एलिस—पटने का अँगरेज एजेन्ट : मंगल मैत्री
आडम्स—ब्रिटिश सेनापति : भगवत प्र० श्रीवास्तव
अमयाट—अँगरेज राजदूत : अनन्त कुमार
जगत सेठ—नवाब का एक दरबारी : देवशरण सिंह
अमीर खाँ—दिल्ली का एक सरदार : चक्रधर
नागरिक— { : जुबैर
: काशीनाथ

स्त्री

जरीना—नवाब की बेगम (मीरजाफर की पुत्री) : कुमारी रत्ना
वसीम—ईरजा की प्रेमिका : कुमारी विमला

सर्वप्रथम 'मगध कलाकार', बख्तियारपुर (पटना) द्वारा, लेखक के निर्देशन में, ११ नवम्बर, १९५० को अभिनीत।

——

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान : मुंगेर। नवाब मीरकासिम का दरबार
समय : सवेरा।

(दरबार में यथास्थान सेनापति तकी खाँ, गुरगन खाँ, जगत सेठ तथा अन्यान्य लोग बैठे हैं। सामने उच्चासन पर नवाब मीरकासिम हैं। दरबार की सजावट सुन्दर है। प्रहरी पहरा दे रहा है।)

मीरकासिम : सिपाहसालारो और साथियो ! आज आपलोग मुर्शिदाबाद से दूर हैं। आपलोग हमारे मुंगेर आने की सबब से वाकिफ होंगे। अँग्रेजों ने नवाब मीरजाफर को बूढ़ा बताकर हमें गद्दी पर बैठाया। हम नहीं जानते थे कि यह उन लोगों की चाल है।

तकीखाँ : जहाँपनाह सही फर्माते हैं।

मीरकासिम : अँगरेजों ने बार-बार रुपये की मदद माँग भेजी। हमने मदद दी। क्या समझते थे कि शेर को खून का जायका मिल चुका है। उनकी लालच बढ़ती गयी। खजाने में रकम नहीं रही। उनलोगों ने हमारी हालत को सही समझा। हमने जान लिया कि मरहूम नवाब सिराजुद्दौला की तरह हमें भी हथियार उठाना ही पड़ेगा। अपनी ताकत को ठीक करने के लिए ही हम मुंगेर चले आये हैं।

गुरगन : आलीजाह हुक्म दें। हम तैयार।

मीरकासिम : जगतसेठ जी से पूछना है कि वे किधर रहेंगे — हमारी ओर या अँगरेजों की ओर ?

जगतसेठ : भला मैं आलमपनाह से दूर कैसे रह सकता हूँ ? मैं आज से नहीं, एक जमाने से मुर्शिदाबाद की सल्तनत की एक खैरख्वाह प्रजा हूँ। नवाब मीरजाफर अली खाँ मेरी कीमत अच्छी तरह जानते थे। हुजूर से क्या कहूँ ?

मीरकासिम : हमसे कुछ छिपा नहीं है सेठजी। हम सब कुछ जानते हैं। हम विलायती ढंग से फौज को ठीक करना चाहते हैं। इसके लिए रकम चाहिये। क्या आप हमारी मदद कर सकेंगे ?

जगतसेठ : मेरी दौलत हर वक्त नवाब साहब की सेवा में नजर है।

(एक प्रहरी आकर, झुककर, तीन बार सलाम करता है)

मीरकासिम : क्या है ?

प्रहरी : पटने के अँगरेज एजेन्ट मि० एलिस दरबार में आना चाहते हैं।

मीरकासिम : मि० एलिस ! क्या बात है ? अच्छा, उन्हें भेज दो।

(सलाम करके प्रहरी का प्रस्थान)

मीरकासिम : यह भी गैर-मुल्कीवालों की एक चाल है। एक तरफ झंझट खड़ा करते हैं, दूसरी तरफ दोस्ती के लिए हाथ बढ़ाते हैं। लेकिन मि० एलिस ?—यह तो हमारा पुराना दुश्मन है।

जगतसेठ : लीजिये, मि० एलिस आ गये।

(पटने के एजेन्ट मि० एलिस का प्रवेश। अँगरेजी ढंग से अभिवादन)

मीरकासिम : शुक्रिया ! मि० एलिस। एलिस, हमारे लिए कुछ हुक्म है क्यों ?

एलिस : हुकुम ?—किस 'माफिक ? हमको कलकेटा कौंसिल से 'लेटर मिला है। इसी से हम आपसे-मीट करने माँगटा ठा।

मीरकासिम : लेकिन क्यों ?

एलिस : आपका नया फरमान बहुत गड़बड़ कर दिया हय। आप मेहरबानी करके अंगरेज से टैक्स नहीं लेटा ठा। अब सब को माफ कर डिया। हिन्दुस्टानी भी टैक्स नहीं डेने लगा। इससे हमारा रोजगार मोशकिल में पड़ गया। यह सब किस माफिक होने सकटा ?

मीरकासिम : हम आपका मतलब समझ गये। शायद अँगरेज लोग नवाबी राजकाज में भी अब अपना पूरा अख्तियार चाहते हैं। मि० एलिस, अँगरेजों ने हमारी दी गई रियासत से काफी नाजायज फायदा उठाया है। खुद तो कम्पनी के ठेकेदार रकम बनाते ही थे, बाद में देशी व्यापारियों पर भी जुल्म ढाने लगे। अँगरेजों की इस हरकत का बयान हमने कौंसिल में लिख भेजा। पर नक्कार खाने में कौन किसकी सुने।

एलिस : आप हम पर यकीन नहीं करटा। हाउ इज इट ? हमलोग डेसी व्यापार में कुछ हाथ नहीं डाला। वी नेवर इन्टरफीयर्ड इन ओर बिजिनेस। आप गलट बोलटा।

मीरकासिम : हम नवाब मीरजाफर नहीं हैं मि० एलिस। हमें आपलोग अपनी उँगलियों पर नहीं नचा सकते। अंगरेजों को हम खूब अच्छी तरह समझ गये हैं। हमलोग दोस्ती की कीमत बड़ी अच्छी तरह चुकाते हैं। क्यों ?

एलिस : वैल्यू आफ फ्रेन्डशिप ! डोस्ती का कीमट हम जानटा हय। जरूर। इसी से आपको नवाब बनाया।

मीरकासिम : आपलोगों ने मुझे नवाब बनाया ? मुर्शिदाबाद की गद्दी तो अँगरेजों की खरीदी हुई थी ! क्यों, है यही बात ? —हमलोगों को आपस में लड़ाकर अपना मतलब बनाया। यही अँगरेजों की चाल है।

एलिस : गलट !

मीरकासिम : बिल्कुल ठीक !

एलिस : क्या आप कोई प्रूफ देने सकठा ?

मीरकासिम : सबूत की कमी नहीं है, मि० एलिस। पलासी की जंग में अगर मीरजाफर को नहीं फोड़ा जाता तो आज शायद आप इस दरबार में इतनी तेजी से बोलने की हिम्मत नहीं करते। बताइये, क्या आप हिम्मत करते ?

एलिस : आपको हम अँगरेज मडड नहीं करटा टो आप इस थ्रोन का सपना भी नहीं डेखटा। पुअर मीरजाफर अली खाँ। वह बहुट अच्छा नवौब ठा।

मीरकासिम : आपलोगों की नजरों में अच्छा वही हैं जो आपके जूते खाये और मौका पड़ने पर आपके लिए अपनी गर्दन कटा दे।

एलिस : हम बहस नहीं माँगटा। स्टोप दिस डिसकसन। हम जिस मटलब से आया हय, होने माँगटा। कलकटा कौंसिल का हुकुम हय आप अपना नया हुकुम हटा लेगा। अँगरेजों को बिना महसूल डिये टिजारट करने का आर्डर डेगा।

मीरकासिम : यह कौंसिल का हुक्म है। लेकिन नवाब के हुक्म के सामने कौंसिल का हुक्म कुछ नहीं है। हम से भी टैक्स नहीं लेंगे। इससे खजाने को घाटा लगेगा

लेकिन आपको क्या ? रिआया के भले-बुरे के जिम्मेदार हम हैं, कौंसिल नहीं। आप अपने गवर्नर से कह दें की नवाब पहले हिन्दुस्तानियों की भलाई की बातें सोचेगा; तब दूसरे की।

एलिस : की नवौब साहब दिस विल लीड यू टू सीरियस ट्रबुल। आप मोशकिल में पड़ेगा। अँगरेज को डुस्मन बनाना आपके लिए अच्छा नहीं होने सकटा ?

मीरकासिम : बुरा क्या होगा, मि० एलिस ?

एलिस : हमलोग आपको इस थ्रोन से हटाएगा। डूसरा नवौब सेलेक्ट करेगा। फिर आपको कौन मडड करने सकटा ?

मीरकासिम : (एकाएक खड़े होकर और तलवार खींच कर) यह तलवार। मि० एलिस, होश में आइये। आप दूत हैं, वरना आपका सिर अभी नाचता नजर आता। मीरकासिम अगर चाहे तो अँगरेजों को खाना मिलना नामुमकिन हो जाये और जल्दी ही ऐसा होगा भी। आपको जबाब मिल चुका। अब आप जा सकते हैं।

एलिस : आज से अँगरेज आपका डुस्मन। सिन्स नाउ बी आर योर बिटर एनेमीज। **(प्रस्थानोद्यत)**

तकीखाँ : (तलवार खींच कर)—ठहरो बदतमीज ! तुम्हारी जबानदराजी वर्दाश्त के बाहर है। जहाँपनाह, हुक्म हो। अभी गुस्ताख को ठिकाने लगाता हूँ।

मीरकासिम : तकीखाँ, हम तुम्हारी बहादुरी के कायल हैं। तलवार निकालने का वक्त अभी नहीं आया है। इन फिरंगियों को अभी पूरी तरह से उभड़ने दो। मुंगेर के तोपखाने में इन लोगों को बहरे बनानेवाली तोपें तैयार हो रह

हैं। जाइये मि० एलिस, गवर्नर से हमारा सलाम बोल दीजियेगा।

एलिस : आइ सी। हम सबको डेखेगा। **(प्रस्थान)**

मीरकासिम : सेठजी, आप अपने मालिकों का रङ्ग-ढंग देख रहे हैं न ?

जगत० : मेरे मालिक ! मेरे प्रभु तो आप हैं।

मीरकासिम : सिराजुद्दौला के खिलाफ क्लाइव को रुपये से मदद करने वाले आप ही थे न ?

जगत० : उस दफा जरूर भूल हुई।

मीरकासिम : उसी छोटी-सी भूल ने सब कुछ किया। आप जैसे लोगों के ही भरोसे ये लोग कूद रहे हैं।

जगत० : लेकिन मैं तो आपकी सहायता करूँगा। -ऐसा वचन दे चुका हूँ। पिछली भूल अब दुहराई नहीं जायेगी जहाँपनाह।

मीरकासिम : शुक्रिया ! तो हम आपसे मदद की उम्मीद करें ?

जगत० : मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मेरी दौलत आपके लिए है।

मीरकासिम : गुरगन खाँ !

गुरगन : यस योर मैजेस्टी !

मीरकासिम : अँगरेज जरूर लड़ेंगे। इन्हें कुचलने के लिए नवाबी ताकत की कमी न रहे।

गुरगन : जहाँपनाह के हुक्म पाने का देर। फौज तैयार है।

मीरकासिम : अच्छी बात है। आपलोग पिछली बातों को भूल कर, मिल्लत की डोर में बँधकर, इन बिदेशियों के खिलाफ तैयार रहें।

सब : तैयार हैं। नवाब मीरकासिम जिन्दाबाद !!

(सब तलवारें निकाल लेते हैं। पट-परिवतन)

दूसरा दृश्य

स्थान : ग्राम-पथ　　　　　　　　　　समय : दोपहर

(सामने एक मकान जल रहा है। बन्दूकों की कई आवाजें होती हैं। नेपथ्य में आर्त्तनाद। हाथ में बन्दूक लिए, कई साथियों के साथ, फ्रांसीसी डाकू सोम्बर का प्रवेश।)

सोम्बर : हाः हाः ! लूटो। खूब लूटो। हिन्दुस्तान को राख में मिला डो। भूख लगे टो आडमी का मांस खाओ। प्यास लगे टो आडमी का लहू पिओ। लहू ! खून !! ब्लड !!! हम सबका डुस्मन। वह डेखो—एक आडमी भागटा हय। **(बन्दूक तानता है)** ब्लडी फूल ! हियर यू आर माई फ्रेन्ड **(गोली चलाता है। नेपथ्य में "आह" की चीत्कार)** गुड ! हाः हाः हाः !

(सबका एक ओर प्रस्थान। दूसरी ओर से दो आदमियों का प्रवेश)

पहला : घोर अन्याय है !

दूसरा : देखो, इन डाकुओं ने उस मकान में भी आग लगा दी है।

पहला : धाँय-धाँय जल रहा है।

दूसरा : अब सब गया ही समझो।

पहला : ये चांडाल हैं कौन ?

दूसरा : ये फ्रांसीसी लोग हैं। इनका हर जगह यही काम है।

पहला : यह भी अँगरेजों का ही फसाद है।

दूसरा : नहीं जी, ये तो अँगरेज के भी दुश्मन है। अँगरेज इंगलैंड के रहनेवाले हैं और ये डाकू फ्रांस के रहनेवाले हैं।

पहला : अब समझा। फिर ये कम्बख्त अँगरेजों ही की तरह कुछ रोजगार क्यों नहीं करते ?

दूसरा : कैसे करेंगे ? अँगरेज इन्हें कुछ करने दें तब तो।

पहला : इन्हें नवाब भी नहीं रोकते क्या ?

दूसरा : ये कम्बख्त जंगलों और पहाड़ियों में छिपे रहते हैं। मौका पाते ही इधर-उधर की बस्तियों में अचानक घुस कर लूट-मार करते हैं।

पहला : भाई, अच्छे दिन गये !

दूसरा : हमें तो यही समझ में नहीं आता कि हमलोग किसकी सल्तनत में हैं।

पहला : क्यों ?

दूसरा : तुम निरे बुद्धू हो।

पहला : मैं बुद्धू हूँ ? तुम गाली बकते हो ? अच्छा नहीं होगा।

दूसरा : अरे भले आदमी, बुरा मत मानो। मैं तो समझा रहा था तुम्हें।

पहला : समझा रहे थे ? क्या समझा रहे थे ? जरा फिर समझाओ।

दूसरा : यही कि हम किसकी सल्तनत में हैं—नवाब की या अँगरेजों की या इन बेरहम डाकुओं की ?

पहला : नवाब को कोई फिक्र ही नहीं है।

दूसरा : अरे, फिक्र आखिर है किसे ? मरो तो ठीक, बचो तो ठीक।

पहला : तो क्या हमलोग भेड़-बकरी हो गये ?

दूसरा : उससे भी गये-गुजरे। अरे, सामने देखो, वही इन डाकुओं का सरदार है।

पहला : भाई, आँखें कितनी बड़ी-बड़ी हैं !

दूसरा : चलता कितना तेज है !

पहला : सुना है कि ये लोग आदमी बेचते हैं।

दूसरा : मैंने भी सुना है।

पहला : (देख कर) हमलोग बातें करते रहे और यह चांडाल सिर पर आ धमका।

दूसरा : बाप रे ! बचाओ।

पहला : भाई रे बचाओ।
(दोनों घबराहट में एक दूसरे को कस कर पकड़ लेते हैं। डर से आँखें बन्द हो जाती हैं। बन्दूक थामे सोम्बर का प्रवेश।)

सोम्बर : ब्लडी फूल्स !

पहला : हुजूर।

दूसरा : माई-बाप।

सोम्बर : टुम अमीर आडमी। हमको रुपया चाहियें। टुम डेने सकटा। तुम देने सकटा टो हम बचाने सकटा। नहीं टो शूट कर डेगा।

पहला : मैं गरीब हूँ। यह फटा कपड़ा देखिये।

सोम्बर : टुम गरीब ! हाः हाः हाः ! फटा कपड़ा ! (हाथ से उसके शरीर का कपड़ा नोच देता है) टुमारा खरचा कम हय। टुम जरूर बचाया होगा। बटाओ, माल कहाँ है ?

पहला : सब तो लूट लिया हजूर। अब कुछ नहीं बचा है।

सोम्बर : (आदमी नं २ से) टुमारा कपड़ा साफ। तुम मालडार आदमी। बटाओ, रुपया कहाँ हय ? जल्डी।

दूसरा : आप माई-बाप हैं। मैं गरीब गाय हूँ।

सोम्बर : गाय कैसा माफिक ? हम डाकू। रुपया डो, नहीं टो

हम मार डालेगा। यू डैमिड !

दोनों : (डरते हुए) अन्नदाता ! जान मत लीजिये।

सौम्बर : माल बटाओ। रुपया निकालो। जल्डी। जल्डी करो।

दोनों : कुछ नहीं है। हम गरीब हैं।

सौम्बर : यू बडमास ! टब टुम को मारने होगा। वन…टू…
(बन्दूक साधता है। दोनों "बाप रे ! बचाओ।" कहकर चिल्लाते हैं। आवेश में सैनिकों के साथ मीरकासिम का प्रवेश।)

मीरकासिम : खबरदार गोरे डाकू !

सौम्बर : कौन हय टुम ?

मीरकासिम : हम हैं नवाब मीरकासिम जिसकी सल्तनत में रहकर तुम धांधली मचा रहे हो। हम तुम्हारा नाम सुन चुके हैं। आज सामने देख रहे हैं। क्या तुम्हें अपनी जान का कुछ भी खौफ नहीं है डाकू ?

सौम्बर : लाइफ ! जान !! हम टकलीफ में हय नवौब। हम मांगटा जस्टिस। इन्साफ। पहले डाकू नहीं रहा। हमको डाकू बनाया गया। हम वहाडुर फ्रेंच। हमारा डेस फ्रान्स हमेशा आजाड रहा। हम आया इन्डिया में रोजगार करने। अंग्रेज हमारा फैक्ट्री जला डिया। हमारा खाना हराम कर डिया। अपना जान वचाने के वास्टे अपना सिपाही का जान वचाने के वास्टे हम डाकू बना। लूटमार और खून ! प्लंडर ऐन्ड ब्लड-शेड। यही काम पकड़ा। रूटी ! बस रूटी के खाटिर हम डाकू बना। हम डिल से बोलटा—इन्डिया को हम प्यार करटा, पर अंग्रेज हमारा डुस्मन।

मीरकासिम : फांसीसी सिपाही, हम तुम्हारी तकलीफ को समझ गये। अगर हम तुमलोगों के खाने का बन्दोवस्त कर दें तो यह काम छोड़ दोगे ?

सौम्बर : ओ यस। हम मांगटा रूटी। आप रूटी डीजिये। हम आपका नौकरी करेगा। हमारा डो सौ सिपाही आपके लिए जान डे डेगा। फांसीसी झूठ नहीं बोलटा, यह आपको वाड में मालूम होगा। लेकिन हम अँगरेज का गुलामी नहीं करेगा। हम जान डे डेगा। पर ब्रिटिशर्स को अपना नहीं मानेगा।

मीरकासिम : शाबाश बहादुर ! हमें इस वक्त ऐसे ही बहादुरों की जरूरत है। तुम आज से नवाबी फौज में अपने साथियों के साथ काम करो।

सौम्बर : हम आपके वारे में जानता। हम नवौब मीरकासिम के लिए अपना जान डे डेगा। आपका हुकुम।

मीरकासिम : (दोनों आदमियों से) तुम लोग अपने गाँव में जाओ। तुम लोगों के हर्जाने पूरे किये जायेंगे।

आदमी : जो हुकुम। (दोनों का जाना)

मीरकासिम : सौम्बर, तुम हमारे साथ मुंगेर चलो।

सौम्बर : जो हुकुम। आज टक हम गरीब पर हथियार उठाया, अब हम अँगरेज पर हथियार उठायेगा। हम नवौब मीरकासिम अली खाँ को पहली सलामी डेटा हय (फौजी ढंग से सलाम करता है।)

(पट-परिवर्त्तन)

तीसरा दृश्य

स्थान : जगतसेठ का घर। समय : रात

(जगतसेठ और मि० एलिस बैठे बातें कर रहे हैं।)

एलिस : हम आपसे मिलना मांगटा। अच्छा हुआ—ए गुड चांस, आप मिल गया।

जगत० : फर्माइये साहब बहादुर, क्या बात है ?

एलिस : हम अंगरेज—आप इन्डियन। हम आपका मांगटा मडड—हैल्प। हम जानटा कि आप हमारा बाट नहीं उठायगा। बंगाल का कन्डीशन अभी खराब हय। बहुट गोलमाल होटा हय। कौंसिल का मेम्बर मीरकासिम को हेट करटा हय। नबौब मुलुक में बखेड़ा करने चाहटा। कौंसिल अमन चाहटा। पीस-सुलह-शान्टी। हाँ, टो हम आपका राय मांगटा। आप क्या सोचने सकटा ?

जगत० : बात तो ठीक है। लेकिन रंग खराब है। नवाब मेरी ओर से सावधान रहते हैं। जरा-सा भी इधर-उधर पाकर वे फौरन मुझे कैद कर लेंगे।

एलिस : लेकिन बैटल आफ प्लासी में टो आप नवौब के एगेन्स्ट क्लाइब को हेल्प किया ठा।

जगत० : जी, वह जमाना कमसिन और नातजुर्बेकार सिराज का था। आज का जमाना पहले से खबरदार मीरकासिम का है। दूसरी बात यह है कि उस समय मैंने क्षणिक उन्माद में आकर भयंकर भूल की थी; पर अब वैसा नहीं कर सकता।

एलिस : आप नहीं जानटा। हमलोग बहुत जल्द एक काम करेगा।

जगत० : क्या ?

एलिस : कौंसिल ने ईस्ट इन्डिया कम्पनी के डायरेक्टर्स को लिखा हय कि मीरकासिम अनफिट-नाकाबिल नवौब हय। बहुत जल्द हम उसको हटाएगा और मीरजाफर को नवौब बनायगा। यह बाट हम आपको पहले बटा डिया, क्योंकि आप मीरजाफर का ब्वोस्ट हय। हमलोग आपको बहुत इज्जट डेगा, मि० जगटसेठ।

जगत० : क्या मीरजाफर सचमुच नवाब होंगे ?

एलिस : बिलीव मी। यकीन कीजिये। आप मदद करने सकटा। फिर तब ओ० के०।

जगत० : आप ने मुझे चक्कर में डाल दिया। मेरा दिमाग काम नहीं करता। मैं क्या करूँ।

एलिस : हेल्प अस ऐन्ड यू विल फाइन्ड एवरीथिंग ओ० के०, सब ठीक होगा। आप ओनली ईस्ट इण्डिया कम्पनी को हेल्प करेगा। फिर डेखेगा कि हम आपके लिए क्या करने सकटा।

जगत० : लेकिन पहले के मेरे बहुत रुपये कम्पनी के जिम्मे बकाये हैं। मैं और क्या उम्मीद करूँ ?

एलिस : आप जानटा, हम कम्पनी का एक आफिसर हय। हमारा बाट उठने नहीं सकटा। हम आपको जुबान डेटा जो आप चाहेगा सब मिलेगा। आपको कुछ करना नहीं हय। आप नवौब के डरबार का खबर हमको डेगा। बस—फिनिश।

जगत० : अच्छा, इतना तो मैं कर सकूँगा। पर कोई जाने नहीं हाँ, ईनाम में जागीर मिलनी चाहिए।

एलिस : डोन्ड वरी, फिकर नहीं। सब ठीक हो जायेगा। अच्छा, अब हम चला। गुड बाई—(प्रस्थानोद्यत, ठीक उसी समय सेनापति तकी खाँ का प्रवेश।)

एलिस : गुडमौर्निंग कमान्डर।

तकी : यह क्या? जगतसेठ के घर में नवाब का दुश्मन? आस्तीन में साँप? मेरी आँखें धोखा तो नहीं खा रही हैं?

जगत० : (घबराहट के साथ)—जी, मि० एलिस का ख्याल बुरा नहीं हैं। वह····तो····तो—सिर्फ—

तकी : मि० एलिस किस ख्याल के है, यह मुझे आपसे जानना नहीं है सेठजी। मैं सल्तनत के सिपहसालार होने की हैसियत से यह जानना चाहता हूँ कि क्या है? क्या सिराजुद्दौला के जमाने का खेल फिर से दोहराया जायगा? क्या नवाब मीरकासिम के साथ आँखमिचौनी कर रहे हैं, सेठजी?

एलिस : आप गलट समझा। हम टो ओनली मिलने आया ठा।

तकी : शायद पहले का बकाया ईनाम चुकाने के लिए। मैं आपका मतलब समझ गया। इस दफा आपको छोड़ देता हूँ। आइन्दा से सोच समझकर कदम बढ़ाया कीजिए, वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।

(एलिस का प्रस्थान)

तकी : और सेठ जी, आप आदमी को पहचानने में गलती नहीं करें, वरना अंजाम वही होगा जिसे आप सोच भी नहीं सकेंगे। बस खबरदार! (प्रस्थान)

—:०:—

चौथा दृश्य

स्थान—हुसैन खाँ का घर

(हुसैन खाँ कपड़ा पहन रहे हैं। पास में ईरजा खाँ बैठे हैं।)

ईरजा : आप तो खाँ साहब, अजीब आदमी हैं।

हुसैन : जनाब, दुनिया ही अजीब है। अगर हुसैन खाँ बहादुर अजीब हुए तो क्या?

ईरजा : आपको सिर्फ कपड़ पहनने में एक दिन लगता है।

हुसैन : जनाब, दूसरा दिन कपड़ा उतारने में खत्म हो जाता है अपनी जवानी के दिन के हाल क्या बताऊँ?—मैं कपड़े का बड़ा शौकीन था।

ईरजा : आज भी आप कम शौकीन नहीं हैं।

हुसैन : अब क्या रहूँगा? अब तो बूढ़ा हो गया हूँ, बाल पक गये हैं।

ईरजा : आपको बूढ़ा कौन कहता है? मुझे आपके साथ खड़ा कर दिया जाय तो आपकी उम्र मुझसे भी कम हो जाय।

हुसैन : आप तो मजाक करते हैं।

ईरजा : खुदा की कसम, सच कहता हूँ।

हुसैन : सच?

ईरजा : आपको यकीन न हो तो कहिए किसी जवान लड़की से शादी करा दूँ। बोलिए, आप तैयार हैं?

हुसैन : नहीं भाई, काले केशवालों के आगे इस मुसल्लम सफेद बालवाले को भला कौन पूछेगी?

ईरजा : खाँ साहब, दो-चार केश उजले होने से ही क्या आदमी बूढ़ा हो जाता? केश पकना तो एक बीमारी है—बिमारी। जबतक दिल में उमंग है, तब तक जवानी है। आपको बूढ़ा कहनेवाला उल्लू है। आप तो सुरमा लगाते हैं, खिजाब लगाते हैं और अगर अल्लाह झूठ नहीं बोलाये तो पत्थर के दाँत लगाते हैं। फिर जवानी कायम रखने के लिए और चाहिये क्या? क्यों खाँ साहब?

हुसैन : बात तो ठीक है। लेकिन क्या सचमुच मेरी शादी हो सकती है?

ईरजा : शौक से ! आप तैयार हो जायें। फिर देखें कि आप कौन-सा खतरा ले आते हैं।

हुसैन : खतरा क्यों?

ईरजा : खाँ साहब, शादी करना एक खतरा है और खुदा की कसम, वह खतरा आ ही कर रहेगा।

हुसैन : मतलब कि मेरी शादी होकर ही रहेगी। क्यों?

ईरजा : जी जनाब।

हुसैन : भाई दिल की बात क्या बताऊँ? मैं भी बहुत दिनों से यही सोच रहा था कि फिर एक शादी करनी बहुत जरूरी है। आप तो जानते ही हैं कि मेरी चार बीबी, जमाना हुआ, मर चुकीं। पाँचवीं की बात क्या बताऊँ—वह भी दगा दे गयी।

ईरजा : कैसी दगा हुसैन साहब?

हुसैन : भाग गयी। बिल्कुल लापता हो गयी। उस वक्त मैं कहीं बाहर गया हुआ था।

ईरजा : उफ ! गजब की बात है। तब तो शादी जरूर करनी

चाहिए। कैसे आप अपने लम्बे-चौड़े मकान में अकेले रहते हैं? नहीं-नहीं, ऐसा नहीं होगा। आपको शादी करनी पड़ेगी।

हुसैन : इस उमर में भला यह छठी शादी? लोग-बाग क्या कहेंगे?

ईरजा : फिर उमर का सवाल छेड़ते हैं? खाँ साहब, यकीन कीजिए। जवान लड़कियाँ अगर आपको अच्छी तरह देख लें तो खाना-पीना भूल जायें, फिदा हो जायें। कसम खुदा की।

हुसैन : (बालों में कंघी डालते हुए) खाँ साहब, मैं आपकी बातों से अलग नहीं हूँ। लेकिन मुझसे शादी करेगी कौन?

ईरजा : नसीम।

हुसैन : नसीम? नसीम? सुभान अल्लाह ! क्या हुस्न है? खूब गाती है। अगर वह नहीं तैयार हो तो?

ईरजा : मैं ठीक कहता हूँ कि वह आप पर मरती है। आपके सर की कसम खाँ साहब।

हुसैन : मेरे सर की कसम? तब आप ठीक कहते हैं। हाँ—ठीक—उस दिन....

ईरजा : क्या हुआ उस दिन?

हुसैन : नसीम से मेरी भेंट हुई थी। उसने मुझे देखते ही अपनी ओढ़नी चेहरे पर कर ली। अब मैं भी समझता हूँ कि वह मुझ पर मरती है।

ईरजा : तब फिर आपकी राय रही न?

हुसैन : जरूर-जरूर।

ईरजा : अच्छा, देर हुई। अब मैं चला।

हुसैन : वाह खाँ साहब। पान तो खा कर जाइये। मैं तुरत पान बनाकर ले आता हूँ। थोड़ी देर और ठहरिए। (**जाते जाते फिर रुक कर**) हाँ, तो उस काम में आज ही हाथ लगा दीजिए।

ईरजा : आज और अभी हाथ लगाऊँगा।

हुसैन : शुक्रिया-शुक्रिया (**जाते-जाते रुककर और दो कदम वापस होकर**) खर्च जो होगा, मैं दूँगा। वह भी जान ले कि नवाब के सिपहसालार की इज्जत कायदे के साथ होती है। आप तो जानते ही हैं कि मैं खानदानी आदमी हूँ कोई मजाक थोड़े हूँ। (**जाना**)

ईरजा : जनाब खानदानी आदमी हैं! बाप थे नवाब सिराजुद्दौला के खिदमतगार और ये हो गये खानदानी आदमी। खैरख्वाही से तो बने हैं सिपहसालार। हालाँकि अपनी जिन्दगी में हजरत कभी जंगेमैदान के पास नहीं फटके। मैं जरा इस बेदाँत-वाले बुड्ढे को नचाउँ अच्छी तरह। नसीम को ठीक करना होगा। (**नसीम का प्रवेश**)

नसीम : कनीज हुजुर की खिदमत में आदाब बजा लाती है।

ईरजा : (**नजदीक जाकर**) नसीम, मैं तुम्हारी ही याद कररहा था।

नसीम : मेरी? हुक्म?

ईरजा : मैं तुम्हारी शादी ठीक कर चूका हूँ।

नसीम : वह तो मैं पहले से जानती हूँ।

ईरजा : मैं अभी ठीक कर चुका हूँ।

नसीम : तो क्या आप मुझसे शादी नहीं करेंगे? क्या आपके वे वायदे झूठे थे?

ईरजा : नसीम, मैं तुम्हारा ही हूँ। लेकिन तुम्हें शादी करनी पड़ेगी हुसैन खाँ से।

नसीम : हुसैन खाँ से? तोबा! उस खब्बीस बुड्ढे से जिसके मुँह में एक भी दाँत नहीं है और जो कब्र में पाँव लटकाये बैठा है?

ईरजा : मैं जैसा कहता हूँ, वैसा करो। हुसैन खाँ को ठीक करो। याद रखो कि तुम उसकी छठी बीवी बनोगी।

नसीम : खुदा हाफिज! छठी बीवी!

ईरजा : उसकी दौलत तुम्हारी रहेगी और तुम मेरी रहोगी।

नसीम : तुम मुझे धोखा तो नहीं दे रहे हो?

ईरजा : चुप रहो हुसैन आ रहा है।

(**हुसैन खाँ का प्रवेश। हाथ में पान के बीड़े**)

हुसैन : लिजिये खां साहब! मेरे हाथ के बने पान के बीड़े हैं। (**नसीम को देखकर**) आप···तुम···नहीं, आप कैसी है?

नसीम : आपकी सूरत देखने आयी हूँ।

हुसैन : (**कपड़े ठीक करके**) ओ, समझा, शायद···क्यों खाँसाहब?

ईरजा : (**मुस्कुराते हुए**) जी आप ठीक समझते हैं।

हुसैन : अच्छा, तो अब आप अभी जा नहीं सकेंगे, खाँ साहब। भीतर चलिये! (**नसीम से**) आप भी! नौकरों को बुलाउँ···अब्दुल! करीम! नहीं-नहीं, कोई परवाह नहीं। जब मैं हूँ तो फिर नौकरों की क्या जरूरत? इधर आइए। (**हड़बड़ी में जाने को एक ओर घुसते है, दरवाजा से सिर टकरा जाता है**) ओह!

ईरजा और नसीम : (**हंसते हुए**) क्या हुआ खाँ साहब?

हुसैन : कुछ नहीं कुछ नहीं। आज ही इस दरवाजे को ईंट से बन्द करवा दूँगा। अच्छा, आइए।

(**सबका जाना**)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान : मुंगेर में नवाब का महल। सामने गंगा-तीर।
समय : चाँदनी रात।

(नवाब की बेगम जरीना टहल-टहल कर गा रही हैं)

गाना

हसरत भरी निगाहें, तुझ पर लगी हुई हैं।
ऐ चाँद छुप न जाओ, आँखें भरी हुई हैं॥
दिल को न चैन होगा, तड़पा करेंगे अरमाँ।
गुजरेंगे किस तरह दिन, उफ दिल्लगी बुरी है॥
ऐ ! माहेताब आ जा, छिप जा न बादलों में।
तुझ से ही जिन्दगी है, तुझ बिन ना जीन्दगी है।

(गाना जारी रहता है। चुपके से नवाब का प्रवेश। वे छिपकर गाना सुनते हैं। बेगम की नजर उन पर पड़ती है। गाना बन्द)

मीरकासिम : **(कुछ हँसकर)** हमने अभी तक यह नहीं समझा कि आखिर किसकी मुहब्बत ने तुम्हें बेचैन कर डाला है ?

जरीना : गुस्ताखी माफ हो। जहाँपनाह की आदत बहुत खराब है।

मीरकासिम : क्या खता हुई ?

जरीना : आप छिप कर मेरा गाना सुना करते हैं।

मीरकासिम : यों कहो कि हम तुम्हारे दिल की दरिया में चुपके से डुबकी लगाकर थाह पाना चाहते हैं।

जरीना : ये बेकार की बातें हैं। हमलोग मुंगेर आये। सोचा था कि यहाँ के गंगा के लुभावने नजारों में मैं अपना दुःख भूल जाउँगी। लेकिन देखती हूँ कि दिल और ज्यादा घबराया करता है।

मीरकासिम : बेगम, मुंगेर में हम मुहब्बत का खेल खेलने नहीं आये हैं। बन्दूकों और तोपों की आवाज सुनने आये हैं।

जरीना : जहाँपनाह, मेरी मुहब्बत को नाचीज समझते हैं। लेकिन मुहब्बत की ताकत को नहीं जानते। जहाँ वह फूल है, वहीं वह कठोर डाली भी है।

मीरकासिम : मलका की बातों का मतलब हम नहीं समझे।

जरीना : बेगम की मुहब्बत आपको वतन से गद्दारी करने को नहीं करता। वह तो आपकी हिफाजत, जिरहबख्तर बन कर करेगी।

मीरकासिम : हम इसे नहीं मानते।

जरीना : आपकी खुशी। आप देखेंगे कि जिसे आप नाजुक और कमजोर समझ रहे हैं, कभी वह अपनी ताकत दिखला कर ही रहेगी। आपने मुझे एक नया सबक दिया है।

मीरकासिम : कौन सा सबक बेगम ?

जरीना : अभी कुछ भी नहीं समझ सकेंगे। मौका आने पर ही सब मालूम हो जायगा। अच्छा, बन्दगी जहाँपनाह।

मीरकासिम : जरा ठहरो मलका।

जरीना : गुस्ताखी माफ हो। जहाँपनाह मुंगेर में मुहब्बत का खेल खेलने नहीं आये हैं। बन्दूकों और तोपों की आवाज सुनने आये हैं। बाँदी को जाने दें।

(प्रस्थान)

मीरकासिम : ताज्जुब ! रूठ गयीं। हमने मजाक किया और मलका चली गयीं। मामूली बात को इतना तूल दे दिया।

नेपथ्य से प्रहरी : आलमपनाह से सिपहसालार तकी खां मिलने आये हैं, इजाजत हो।

मीरकासिम : आने दो।

(तकी खां का प्रवेश। अभिवादन।)

तकी : जहाँपनाह से कलकत्ता-कौंसिल के दूत मि० अमयाट मिलना चाहते हैं।

मीरकासिम : मि० अमयाट ? कलकत्ता-कौंसिल का दूत ?

तकी : जी हां, जहाँपनाह।

मीरकासिम : तकी खां, हम इन गोरों को अच्छी तरह समझ गये हैं। हमें इनकी बातों पर जरा भी यकीन नहीं होता। खैर जब आये हैं तो भेज दो।

(अभिवादन कर तकी का प्रस्थान)

मीरकासिम : हाल ही में गवर्नर वंशीटार्ट से सुलह हुई। लेकिन सुलहनामे की स्याही सूखने भी नहीं पायी कि इन लोगों ने लूट-मार शुरू कर दी। अब आया है मि० अमयाट। देखें क्या गुल खिलता है ?

(अँगरेज दूत मि० अमयाट का प्रवेश। अभिवादन। साथ में तकी खां।)

मीरकासिम : आप ही अँग्रेज दूत मि० अमयाट ?

अमयाट : ओ यस ! हम आया पीस करने। कलकटा-कौंसिल बखेड़ा नेई माँगटा। करने माँगटा ट्रिटी—सुलह।

मीरकासिम : बहुत अच्छे हैं आपलोग। लेकिन बखेड़ा करता है कौन ? हाल में हमारे और आपके बीच इसी मुंगेर में सुलह हुई। उसे तोड़ा किसने ?

अमयाट : हम नेई ब्रेक किया।

मीरकासिम : सुलह करने के बाद अँगरेजी फौजी दस्ते हर जगह भेजे जा रहे हैं, नवाब के मुलाजिम हर जगह बेइज्जत किये जा रहे हैं। यह सब क्या है ?

अमयाट : आप भी गलटी किया। फ्रेंच लोग से हाठ मिलाया। अँगरेज के अँगेंस्ट पलटन भर्टी किया। इसका मटलब ?

मीरकासिम : हमने भूखे फ्रांसीसियों को डाकू के पेशे से हटाया। सुलह करने के बाद हमने कुछ नहीं किया। सुलह की भी मियाद होती है। इन्सान के लफ्जों की भी कुछ कीमत होती है। आप लोग ऊपर से दोस्ती निभाते हैं और भीतर से दुश्मनी की आग भड़काते हैं।

अमयाट : हम फिर सुलह करने आया है।

मीरकासिम : जब तक आपलोगों के बुरे इरादे दूर नहीं होते, हम सुलह नहीं कर सकते।

अमयाट : हम कौंसिल के टरफ से कसम खाटा। हम आपका डोस्ट।

मीरकासिम : आप अभी आराम कीजिए। हम सोच-समझ कर कुछ कहेंगे।

अमयाट : आपका मर्जी।

मीरकासिम : तकी खां, मि० अमयाट की खातिरदारी करो।

(तकी और अमयाट का प्रस्थान)

मीरकासिम : सुलह तो मानो बच्चों का खेल है।

(कुछ देर तक टहलते रहते हैं। दूर से अँगरेज फौजी बाजे की आवाज आती है। नवाब चौकन्ने होते हैं।)

मीरकासिम । यह क्या ? यह तो अँगरेजो के जंगी बाजे की आवाज है। तो क्या ? कोई है ? दरवान !

(आवेश में सौम्बर का प्रवेश)

सौम्बर : नबौब साहब ! वहुट मोशकिल।

मीरकासिम : क्या हुआ सौम्बर ? यह कैसी आवाज है ?

सौम्बर : हम देखा डूर से नाव पर अँगरेज का पलटन।

मीरकासिम : अँगरेजों की पलटन ?

सौम्बर : यस योर मैजेस्टी।

मीरकासिक : तो क्या मि० अमयाट मुझे भुलावा देने आया था ?

नेपथ्य से प्रहरी : आलमपनाह से सिपहसालार तकी खाँ मिलने आये हैं, इजाजत हो।

मीरकासिम : आने दो।

(तकी खाँ का प्रवेश। अभिवादन।)

तकी : जहाँपनाह से कलकत्ता-कौंसिल के दूत मि० अमयाट मिलना चाहते हैं।

मीरकासिम : मि० अमयाट ? कलकत्ता-कौंसिल का दूत ?

तकी : जी हाँ, जहाँपनाह।

मीरकासिम : तकी खाँ, हम इन गोरों को अच्छी तरह समझ गये हैं। हमें इनकी बातों पर जरा भी यकीन नहीं होता। खैर जब आये हैं तो भेज दो।

(अभिवादन कर तकी का प्रस्थान)

मीरकासिम : हाल ही में गवर्नर वंशीटार्ट से सुलह हुई। लेकिन सुलहनामे की स्याही सूखने भी नहीं पायी कि इन लोगों ने लूट-मार शुरू कर दी। अब आया है मि० अमयाट। देखें क्या गुल खिलता है ?

(अंगरेज दूत मि० अमयाट का प्रवेश। अभिवादन। साथ में तकी खाँ।)

मीरकासिम : आप ही अँग्रेज दूत मि० अमयाट ?

अमयाट : ओ यस ! हम आया पीस करने। कलकटा-कौंसिल बखेड़ा नेई माँगटा। करने माँगटा ट्रिटी—सुलह।

मीरकासिम : बहुत अच्छे हैं आपलोग। लेकिन बखेड़ा करता है कौन ? हाल में हमारे और आपके बीच इसी मुंगेर में सुलह हुई। उसे तोड़ा किसने ?

अमयाट : हम नेई ब्रेक किया।

मीरकासिम : सुलह करने के बाद अँगरेजी फौजी दस्ते हर जगह भेजे जा रहे हैं, नवाब के मुलाजिम हर जगह बेइज्जत किये जा रहे हैं। यह सब क्या है ?

अमयाट : आप भी गलटी किया। फ्रेंच लोग से हाठ मिलाया। अँगरेज के अँगेस्ट पलटन भर्ती किया। इसका मटलब ?

मीरकासिम : हमने भूखे फ्रांसीसियों को डाकू के पेशे से हटाया। सुलह करने के बाद हमने कुछ नहीं किया। सुलह की भी मियाद होती है। इन्सान के लफ्जों की भी कुछ कीमत होती है। आप लोग ऊपर से दोस्ती निभाते हैं और भीतर से दुश्मनी की आग भड़काते हैं।

अमयाट : हम फिर सुलह करने आया है।

मीरकासिम : जब तक आपलोगों के बुरे इरादे दूर नहीं होते, हम सुलह नहीं कर सकते।

अमयाट : हम कौंसिल के टरफ से कसम खाटा। हम आपका डोस्ट।

मीरकासिम : आप अभी आराम कीजिए। हम सोच-समझ कर कुछ कहेंगे।

अमयाट : आपका मर्जी।

मीरकासिम : तकी खाँ, मि० अमयाट की खातिरदारी करो।

(तकी और अमयाट का प्रस्थान)

मीरकासिम : सुलह तो मानो बच्चों का खेल है।

(कुछ देर तक टहलते रहते हैं। दूर से अँगरेज फौजी बाजे की आवाज आती है। नवाब चौकन्ने होते हैं।)

मीरकासिम । यह क्या ? यह तो अँगरेजो के जंगी बाजे की आवाज है। तो क्या ? कोई है ? दरबान !

(आवेश में सौम्बर का प्रवेश)

सौम्बर : नवौब साहब ! वहुट मोशकिल।

मीरकासिम : क्या हुआ सौम्बर ? यह कैसी आवाज है ?

सौम्बर : हम देखा डूर से नाव पर अँगरेज का पलटन।

मीरकासिम : अँगरेजों की पलटन ?

सौम्बर : यस योर मैंजेस्टी।

मीरकासिक : तो क्या मि० अमयाट मुझे भुलावा देने आया था ?

सौम्बर : मि० अमयाट ? ब्लडी फूल ! कहाँ हय ? हम उसको खुद शूट करेगा।

मीरकासिम : यह पलटन क्या मुंगेर पर हमला करने आ रही है ?

सौम्बर : हम को पटा लगा, यह सब मि० एलिस के पास पटना जाटा हय।

मीरकासिम : ये अँगरेज तो अजीब दोस्त निकले। एक ओर सुलह की बात दूसरी ओर जंगी तैयारी। खूब !

सौम्बर : नवौब साहब ! हमारा पलंटन टैयार। हम अँगरेजी नाव पर अटैक करने मांगटा। उसको लूटने मांगटा। आपका हुकुम। जल्डी।

मीरकासिम : सोचने दो सौम्बर। जल्दीबाजी अच्छी नहीं। हम मि० अमयाट को लफ्ज दे चुके हैं।

(तकी खाँ का पुनः प्रवेश)

तकी खाँ : मि० अमयाट रोकने पर भी नहीं रुके। चले गये। बोले कि मेरे बजरे तैयार हैं। जल्द जाना चाहिए।

सौम्बर : ओ हिवन्स ! डुस्मन भाग गया और आप जाने डिया कमाण्डर ? ह्वाट्स दिस ? नवौब साहब, अब सोचना नहीं कुछ। हम मि० अमयाट का पीछा करने मांगटा। हुकुम ! जल्डी !—हम नाव को लूटेगा।

मीरकासिम : हमने तय कर लिया है। अब दबने से काम नहीं चलेगा। सौम्बर, तुम अँगरेजों का पीछा करो। तकी खाँ तुम इनकी मदद करो। जल्दी जाओ।

सौम्बर : बेईमान अँगरेज ! राइटो !—हम चलो।

तकी खाँ : चलिए मि० सौम्बर। जल्दी कीजिए।

(दोनों का प्रस्थान)

मीरकासिम : यह साजिश ! (प्रस्थान)

—:o:—

छठा दृश्य

स्थान : गंगा नदी।

(गंगा के वक्षस्थल पर कई नावें जा रही हैं। नावों पर सहस्र अँगरेज सैनिक हैं। अँगरेजी बाजे बज रहे हैं।)

नेपथ्य से अमयाट : हाल्ट !

(नावें रुक जाती हैं। तेजी में मि० अमयाट का प्रवेश। जल्दी से नाव में सवार होता है।)

अमयाट : भागो ! डुश्मन सिर पर हय।

(नावें आगे बढ़ती हैं। नेपथ्य में बन्दूकों की आवाज)

अमयाट : ओ माई गौड् ! दे हैव कम। टैयार हो जाओ।

(सभी सैनिक तैयार हो जाते हैं। पीछे से दूसरी नाव आती है। उस पर सौम्बर, तकी खाँ तथा सैनिकगण बन्दूक लिये खड़े हैं।)

सौम्बर : हाल्ट।

अमयाट : ह्वाट डु यू वान्ट ?—टुम क्या मांगटा ?

सौम्बर : अँगरेज का खून।

अमयाट : टुम कौन हय ?

सौम्बर : टुम्हारा डुश्मन। फ्रेन्च कमाण्डर सौम्बर।

अमयाट : सौम्बर ?

सौम्बर : हां, डाकू सौम्बर। अँगरेज का डुश्मन सौम्बर।

अमयाट : देन यू विल डाई। टुम मरेगा।

सौम्बर : डेखो, कौन मरटा हय (गोली मारता है)।

अमयाट : आह ! सौम्बर ! (गिरना)

सौम्बर : हाः हाः हाः !

(दोनों ओर से गोलियाँ चलती हैं। लोग गिरते हैं। चीत्कार)

सोम्बर : हाः हाः हाः ! बदला ! बदला ! रिवेन्ज !

(कूदकर अँगरेजों की नाव में चढ़ जाता है।)

अँगरेज : सैनिक भागो ! भागो ! (लोग कूद-फाँद करने लगते हैं। सोम्बर अट्टहास करता है। नाव में आग लगा देता है। आग का दृश्य)

[पटाक्षेप]

—:o:—

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान : मीरजाफर का महल

(अकेले बूढ़े मीरजाफर खड़े हैं।)

मीरजाफर : आज मैं अपने ही महल में कैद हूँ। मेरे इर्द-गिर्द कड़े पहरे हैं। बेईमान मीरजाफर ! यही तेरी सजा है। यही तेरी सजा है। तूने भोले सिराज का खून कराया। हिन्दुस्तान की आजादी को तख्त पाने के लालच में गोरों के हाथ बेच डाला। अलीवर्दी के नमक का बदला बेईमानी से चुकाया। नहीं भूल सकता। बुढ़ापे की धुँधली रौशनी में भी मेरे काले कारनामे साफ मालूम दे रहे हैं। लुत्फुन्निसा का कहना सच हुआ। मैंने तख्त को खोया। अपने जवान बेटे मीरन को भी खोया। रोओ, रोओ। बूढ़े मीरजाफर खूब रोओ। तुमने दुनिया को रुलाकर कहकहा लगाया। अब दुनिया तुम पर हँसे। हाहाकार ! बंगाल के जर्रे-जर्रे से हाहाकार की आवाज निकल रही है !

(अँगरेज सेनापति मि० आडम्स का प्रवेश)

आडम्स : गुडमोर्निंग एक्स नवौब।

मीरजाफर : किसे किया सलाम आपने ? पहिचाना हमें ?

आडम्स : हम जानटा। आप नवौब मीरजाफर अली खाँ।

मीरजाफर : नवाब मीरजाफर अली खाँ ! नवाब मीरजाफर अली

मीरजाफर : यह क्या ? क्या सिराज का बदला मीरकासिम लेगा ? यह भी क्या मुमकिन है ? नहीं, नहीं मेजर आडम्स । मुझे माफ कीजिये । मैं गिर चुका हूँ । मुझे और न गिराइये ।

आडम्स : नवौब ! आप डरपोक हय ? मीरकासिम से डरटा हय ?

मीरजाफर : नहीं, यह बात नहीं है ।

आडम्स : यही बाट हय फैक्ट ।

मीरजाफर : नवाब मीरकासिम मेरा दुश्मन नहीं हो सकता । आप जोश न बढ़ाइये कि इन बूढ़ी हड्डियों का खून गर्म हो जाये ।

आडम्स : नवौब ! आप पछटायगा ।

मीरजाफर : पर्वाह नहीं ।

आडम्स : आप टाइम को डेखिये ।

मीरजाफर : मैं सब देखता हूँ । अपनी भयंकर-भूल को मैं दोहराना नहीं चाहता । पलासी ! पलासी !! आह पलासी !!! पलासी का लाल खून भुलाये नहीं भूलता । नहीं-नहीं, आप जाइये साहब, मैं इस काम में आपका साथ नहीं दे सकता । एक दफा मैंने अपने देश के लोगों के गले में गुलामी की जंजीर डाल दी थी । अब हो सका तो उस जंजीर को काटने की कोशिश करूँगा, उसे और मजबूत बनाने की नहीं ।

आडम्स : सोच लिजिये । मीरकासिम आपका डुश्मन । अंग्रेज आपका डोस्ट । आई फियर, हमको डर है कि अंग्रेज भी आपका डूश्मन हो जायगा । जानटा हय, टब क्या होने सकटा ?

मीरजाफर : क्या होगा ?

खाँ ! क्या मैं नवाब हूँ । क्या इसी से अंग्रेजों ने मुझे यहाँ बन्द कर रखा है ।

आडम्स : आप आजाड । आप बंगाल-बिहार और उड़ीसा का राजा

मीरजाफर : और मीरकासिम

आडम्स : कौन मीरकासिम । वह कोई नहीं । आपको ईस्ट इंडिया कम्पनी थ्रोन वापस करटा ।

मीरजाफर : मुझे यह गद्दी नहीं चाहिए । अब मुझे अपने करनामों पर पछताने दीजिये ।

आडम्स : नहीं होगा । आप नहीं समझटा । मीरकासिम आपके जान का दुश्मन । हम अंग्रेज उससे रुपया लेने भर ठा । फिर कुछ नहीं । यू आर आवर नवौब । वी० आर योर फेथफुल सरवेन्टस् । आप डरटा काहे । हम आपको अभी मुर्शिदाबाद ले चलेगा ।

मीरजाफर : नहीं अब और नहीं । मेरे अरमान मर गये । मीरकासिम ने तो अंग्रेजी का कर्ज चुकाया । उसे ही पसन्द पर रहने दीजिये ।

आडम्स : इम्पौसिबल । ईस्ट इंडिया कम्पनी उसका दुश्मन आपको चलने होगा । हम आपके खाटिर हम एक बार और ।

मीरजाफर : क्या

आडम्स : मीरकासिम आपका मर्डर करने मागटा । आपका खून करने वोलटा । आप समझटा ?

मीरजाफर : यह नहीं हो सकता

आडम्स : सब होने सकटा वह मूंगेर में बड़ा पलटन टैयार किया, जल्डी मार्च करेगा ।

आडम्स : आपका पेन्सन बंड होगा। आप भूखों मरेगा।

मीरजाफर : ओह ! यह बात ? क्या मीरजाफर इस तरह बँधा है कि कोशिश करने पर भी छूट नहीं सकता ? क्या गुलामी की जंजीर इतनी मजबूत होती है कि काटने पर भी नहीं कटती ?

आडम्स : आप क्या सोचटा जनाब ? हम आपको पहला माफिक इजट देगा। आपका लड़का नजीमुड्डौला आपके बाड नबौब बनेगा। हम ईस्ट इंडिया कम्पनी का मेजर आडम्स। आप जबाब डीजिये। आपका हेल्प माँगटा। हुकुम। बस फिनिश।

मीरजाफर : लोभ की ऐसी ही सुनहली दुनिया पर तो मैं उस दफा भी सब कुछ भूल बैठा था। बंगाल की आजादी तख्त पाने की लालच में बेच बैठा था। आज न आजादी रही और न तख्त रहा। सिर्फ मैं हूँ रोने के लिए उन बातों पर। मेजर आडम्स ! मेजर आडम्स !! आपही बताइये, मैं क्या करूँ ?

आडम्स : नबौब ! आप मेरा हाठ पकड़िये। आइये मेरे साठ। अपना डुस्मन खटम कीजिये। फिर आप का राह साफ बिल्कुल साफ। चलना होगा मुर्शिडाबाद। आप बैटल का हुकुम डीजिये। कम्पनी का फौज मार्च करेगा। आप का हुकुम।

मीरजाफर : हुक्म ! अच्छा मैं चलता हूँ इसलिये नहीं चलता हूँ मैं चलना चाहता हूँ वल्कि इसलिए चलता हूँ कि मैं चलाया जाता हूँ। चलिये, चलिये मेजर मुर्शिडाबाद की तरफ। एक बार, एक बार फिर····

(आडम्स का हाथ पकड़े हुए मीरजाफर का प्रस्थान)

—:०:—

दूसरा दृश्य

स्थान : पटने में मि० एलिस का आफिस

(मि० एलिस और जगतसेठ बैठे बातें कर रहे हैं। मेज पर शराब है। साहब खुद ढाल-ढाल कर पीता है।)

एलिस : मि० जगतसेठ, रियली आइ एम ओवरज्वाइड टूडे।

जगतसेठ : हुजूर, मैं कुछ नहीं समझा।

एलिस : कुछ नेही समझा ? कुछ भी नेही ? व्हाई सो ? काहे ?

जगतसेठ : हुजूर, मैं अंगरेजी नहीं जानता। हिन्दी में बातें कीजिये।

एलिस : हा: हा: हा: ! ठीक ठीक। हिन्डी मारवाड़ी में नेही मि० जगतसेठ ?

जगतसेठ : हुजूर, वह तो और टेढ़ी है।

एलिस : टेढ़ी किस माफिक ? टेढ़ी कौन ? क्या मटलब ?

जगतसेठ : हुजूर टेढ़ी मतलब टेढ़ी, इस तरह····

(हाथ घुमा कर बतला देता है)

एलिस : अब समझा। टेढ़ी रिक्यार्स ऐक्शन। **(ढालकर)** लीजिये, एक पेग····अँगूर का बना हुआ।

जगतसेठ : मैं नहीं पीता।

एलिस : आप खाली टका रखना जानटा, वाइन रखना नेही।

जगतसेठ : टका से ही सब-कुछ होता है।

एलिस : राइट यू आर। हाँ तो मि० जगतसेठ, आज हम बहुट-बहुट खुश—वेरी ग्लैड। हमारा नाव नबौब मीरकासिम लूट लिया, मि० अमयाट को गोली मारा। हम भी····

जगतसेठ : हुजूर, सौम्बर ने मि० अमयाट को गोली मारी।

एलिस : (दाँत पीस कर) डैंड ब्लडी सौम्बर। फॅचडाग ! हम उसको भी डेखेगा। आज हम पटना को लूट कर यहाँ कम्पनी का राज कायम किया। रात को चुपके से मेरा पलटन शहर घुस कर गोली चलाना शुरू किया और खूब लूटा। आज यहाँ कम्पनी का राज।

(बाहर "भागो-भागो" की आवाज)

जगतसेठ : ये लोग कौन हैं ?

एलिस : सब भागटा। हमारा पलटन पीछा करटा। मारो। लूटो। पटना को खटम कर डो।

जगतसेठ : मि० एलिस, मेरा हृदय ऐसा करुण-दृश्य नहीं देख सकता। मैं भी इसी देश का एक निवासी हूँ। आपने छल करके मुझे अपनी ओर मिला लिया और मेरे ही खर्च से यह नर-संहार शुरू किया। मैं इतना पाषण नहीं हूँ कि यह सब देखा करूँ।

एलिस : कुछ फिकर मट कीजिये। यह बडला हय मीरकासिम से बडला लेटा। अब मुंगेर पर अटैक करने मांगटा यह कौंसिल हुकुम।

जगतसेठ : साहब, आपने मुझे विचित्र हालत में रखा है। नवाब मीरकासिम मुझ से खबरदार रहते हैं। कहीं उन्हें मालूम हो जाय कि इस नर-संहार के समय मैं आपके कमरे में बैठा हूँ तो प्रलय हो जायगा।

एलिस : डैम प्रलय। हम बचायेगा। नवौब अब जल्डी सिराज के माफिक खटम होगा। (शराब पीते हुए) ओह, कम्पनी हमको गवर्नर बनायेगा। एजेन्ट से गवर्नर। गुड गौड ! आप जानटा ?

जगतसेठ : साहब, आप नहीं जानते कि नवाब मुझ पर यकीन नहीं करते। मेरे पीछे कई जासूस छूटे हैं। आपके पास मेरा रहना ठीक नहीं है।

एलिस : सब ओ० के०। पटना के बाड मुंगेर-मुंगेर। हम जल्डी मुंगेर पर हमला करेगा।

नेपथ्य में : अल्लाह हो अकबर ! (बन्दूकों की आवाज)।

एलिस : और जगत—यह क्या ?

जगतसेठ : (घबराहट में) यह नवाबी फौज की जय-ध्वनि है।

एलिस : ह्वाट ? नवौब। हाउ इज इट ? इम्पौसिबल। ऐ ! कोई हय ?

नेपथ्य में : नवाब मीरकासिम जिन्दाबाद !

एलिस : ओ यस। नवौब ! नवौब !!

जगतसेठ : मैं तो मिट गया। मुझे बचाइये। मुझे बचाइये हुजूर।

एलिस : ओह ! हम सोचने मांगटा। नवौब किस माफिक ?

जगतसेठ : हुजूर, जल्दी बचाइये मैं मरा....

(सहसा सौम्बर और सैनिकों के साथ मीरकासिम का प्रवेश। जगत और एलिस भयातुर।)

मीरकासिम : तुम्हारे मरने में ही देश का भला है, सेठ जी।

जगतसेठ : जहाँपनाह !

मीरकासिम : चुप रहो, शर्म नहीं आती ? पदवी की लालच में देश के अनगिनत लोगों की आजादी बेच रहे हो ? फिर वही गलती ? अब नहीं, हम आज ही इस किस्से का खात्मा किये देते हैं। सौम्बर !

सौम्बर : हुकुम।

मीरकासिम : सेठ को गोली मार दो। ऐसे नापाक जिस्म को दुनिया से दूर कर देना ही अच्छा है।

सौम्बर : सेठजी रेडी।

जगतसेठ : **(रोते हुए और मीरकासिम के पैर पकड़ कर)** क्षमा, अन्तिम बार क्षमा।

मीरकासिम : आप दन में आग लगाकर हाथ सेंकना चाहते हैं ? हमारे रहते ऐसा नहीं होगा।

सौम्बर : रेडी सेठजी, वन टू····

जगतसेठ : **(मीरकासिम से, उसी भाव में)** मि० सौम्बर को रोकिये जहाँपनाह। वह निशाना ठीक कर चुके हैं। मुझे अन्तिम बार प्राण-भिक्षा दीजिये। अन्तिम बार····

सौम्बर : नबौव !

मीरकासिम : ठहरो सौम्बर। इनकी जान न लो। लेकिन अब इन्हें कैद में रखो ताकि ये फिर शैतानी न कर सकें।—और आप मि० एलिस, जरा बतलाइये तो कि क्या यही शराफत है ? दगाबाजी के बल पर आप लोग कब तक यहाँ टिक सकेंगे ?

एलिस : हम कौंसिल का हुकुम जानटा ! इसी से पटना को जीट लिया।

मीरकासिम : यही जीत हैं ? घरों में आग लगा देना, लूटमार करना, खून की धारा बहाना। यही जीत है ? यह तो डाकुओं का काम है। शैतान का काम है कम्पनी के इन सिपाहियों की तनख्वाहें कौन देता है ? जरा बतलाइये तो।

एलिस : नबौव डेटा हय।

मीरकासिम : हमारे नाम पर सिपाही भर्ती किये गये। शाही खजाने से उनके लिए तनख्वाहें ली गयीं। वे सिपाही हमारे ही खिलाफ काम में लाये गये। रात को पटना लूटा गया। इन बातों की कैफियत चाहिये।

एलिस : कौंसिल डेगा, हम नेही।

मीरकासिम : समझ लेंगे कौंसिल को भी। आपकी हरकतों से सारा हिन्दुस्तान वाकिफ हो गया है। बहुत जल्द आप लोगों को अपने बिस्तर समेट कर घर का रास्ता पकड़ना पड़ेगा। सौम्बर ! इस शैतान को हिरासत में ले लो। जब तक पूरी कैफियत न मिले, इसे कैदखाने में रखना पड़ेगा। ले जाओ।

(नवाब के सिवा सबका प्रस्थान)

मीरकासिम : ऐसी दगाबाजी ! बेईमानी !

(तकीखाँ का प्रवेश। कोर्निश)

मीरकासिम : क्या खबर है तकी खाँ ?

तकी : जहाँपनाह, खबर मिली है कि मीरजाफर फिर मुर्शिदाबाद की गद्दी पर बैठाये गये हैं।

मीरकासिम : यह हम पहले समझते थे। अभी उनकी आँखें खुली नहीं हैं। इसी से तो लोग उन्हें "अंगरेजों का पालतू जानवर कहते हैं"।

तकी : मीरजाफर के हुक्म से मेजर आडम्स मुंगेर पर हमला करने के लिए चल पड़े हैं।

मीरकासिम : **(साश्चर्य)** मुंगेर पर हमला ! अच्छी बात है। तुम उनका सामना करो। जाओ। हम भी जल्द ही कूच करेंगे।

तकी : जो हुक्म।

मीरकासिम : सुनो सिपहसालार, तुम वतन की आजादी के लिए लड़ने जा रहे हो। हम तुम्हारी फतहयाबी की उम्मीद में रहेंगे। जाओ, विदा।

(तकी का अभिवादन करके जाना)

तीसरा दृश्य

स्थान : हुसैन खाँ का मकान

(हुसैन खाँ की छठी बीबी नसीम टहल-टहलकर गा रही है ।)

मस्ती से भरा दिल यह, छलका हुआ सागर है ।
क्या हुस्न है नुरानी, क्या शराब है रौशन है ॥
क्या खूब जवानी है, आतिश है कि पानी है ।
गर जलते हैं परवाने, तो चश्म कहीं तर है ॥
मस्ती० ॥

(ईरजा खाँ का प्रवेश)

ईरजा : तो तुम गा रही हो ?

नसीम : जी-नहीं, मैं खाना खा रही हूँ ।

ईरजा : मेरी आँखें पत्थर की नहीं है । मैं साफ देख रहा हूँ कि तुम टहल-टहलकर गा रही हो ।

नसीम : जी, मैं टहल-टहल कर गा रही हूँ । लेकिन आपके पूछने का मतलब ?

ईरजा : मैं कुछ पूछने नहीं, बल्कि तुमसे मिलने आया हूँ ।

नसीम : बड़े अच्छे आदमी हैं आप । मुझे तो दूसरे के गले में बाँध दिया, और खुद आये हैं मिलने ।

ईरजा : तो क्या मुझसे नाराज हो नसीम ? मैंने तो यह सब तुम्हारे भले ही के लिए किया । आज तुम सिपहसालार हुसैन खाँ की छठी बीबी हो । एक महल की मालकिन हो । उस बुड्ढे को जैसे भी चाहती हो, नचाती हो । तुम्हारी कसम, मुझे तो तुमसे डाह होती है ।

नसीम : लेकिन जब वह छठी बीबीवाला बे-दाँत का बूढ़ा मुहब्बत की मुझसे बातें करने लगता है तो मेरा जी चाहता है कि कान पकड़ कर उसे दूर कर दूँ ।

ईरजा : तो फिर वैसा करती क्यों नहीं ? मेरा तो खयाल है कि जल्दी हुसैन खाँ का काम तमाम कर दिया जाय । फिर····

नसीम : फिर क्या ?

ईरजा : फिर हम-तुम दूर जाकर बस जायँ ।

नसीम : इरादा कुछ बुरा नहीं है ।

ईरजा : तुम तैयार हो ?

नसीम : मैं तैयार हूँ ।

ईरजा : तो कब ?

नसीम : आज ही । जरा उसे घर से बाहर जाने दीजिये । मैं भी उसे दिखला देना चाहती हूँ कि बुढ़ापे में शादी करने का क्या नतीजा होता है । मैं उसकी जान नहीं लेना चाहती । सिर्फ उसे छठी बीबी का पाठ पढ़ाना चाहती हूँ । आप अभी जाइये ।

ईरजा : तो देखना, तैयार रहना । मौके से फायदा उठाना चाहिये । **(जाना)**

नसीम : इस उम्र में छठी शादी ? खुदा हाफिज ! मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि मरने के वक्त ये मर्द शादी करते हैं । क्यों अगर औरत किसी का मुँह भी देखे तो इनका पारा गर्म हो जाता है । क्या खुदा ने औरत को दिल नहीं दिया है ? **(सामने देखकर)** देखो, वही बुड्ढा आ रहा है । आते ही मुहब्बत की बातें शुरू करेगा ।

(हुसेन खां का प्रवेश)

हुसैन : मुझे तो परेशान कर डाला। तुम यहाँ हो और मैं दुनियाँ के हर कोने में तुम्हें ढूँढ़ आया।

नसीम : आखिर बात क्या है ?

हुसैन : कुछ नहीं, बिना तुम्हें देखे मैं जी नहीं सकता। बस, यही बात है। अच्छा एक बात बताओगी ?

नसीम : पूछिये।

हुसैन : तुम मुझे प्यार करती हो या नहीं ?

नसीम : आपको प्यार नहीं करती, आप पर रहम करती हूँ।

हुसैन : रहम क्यों ?

नसीम : क्योंकि आप बूढ़े है, कब्र के नजदीक हैं।

हुसैन : मैं बूढ़ा हूँ ? कौन मुझे बूढ़ा कहता है ? मैं तो ईरजा खाँ से भी जवान हूँ। बाल बीमारी से पक गये हैं तो क्या मैं बूढ़ा हो गया ? पत्थर के दाँत क्या असल दांत से कम कीमती होते हैं ? दिल में उमंग रहते भला कोई बूढ़ा होता है ? मैं जवान हूँ, बिल्कुल जवान। और मरना क्या ? एक-न-एक दिन तो हर इन्सान मरता है। तुम मरोगी। मैं भी मरूँगा। लाहौल बिला कूबत !

(ईरजा खाँ का पुनः प्रवेश। हाथ में शाही फरमान।)

ईरजा : आदाब अर्ज खाँ साहब। आपके नाम यह शाही फरमान है।

हुसैन : खुदा हाफिज ! शाही फरमान ? क्या बात है।

ईरजा : आप खुद पढ़ लीजिये।

हुसैन : भाई मैं बूढ़ा हूँ। जरा पढ़ दो, मेरी आँखों में रौशनी कुछ कम है।

नसीम : आप अभी तो जवान बने थे, और तुरत बूढ़े हो गये ?

हुसैन : (बिगड़ कर) गुस्ताख, चुप रहो। हाँ तो खाँ साहब, जरा कहिये कि कैसा फरमान है ?

ईरजा : आप........।

हुसैन : मैं ? या अल्लाह ! क्या हुआ मुझे ?

ईरजा : आप आज ही...........

हुसैन : आज ही ? मैं और आज ही ? आफत है।

(घबराहट)

ईरजा : आपको आज ही जंग में जाना पड़ेगा।

हुसैन : **(विस्फारित नयन)** जंग में ? अरे फिर से समझ कर बोलिये जनाब। या खुदा ! बचाओ। खाँ साहब, जरा हिसाब से मतलब कहिये। मजाक पीछे कीजियेगा। मेरा बदन इधर-उधर हो रहा है।

ईरजा : बात साफ है। कम्पनी की फौज मुर्शिदाबाद से चल चुकी है। नबाब साहब का हुक्म है कि तकी खाँ, हुसैन और मिर्जा ईरजा खाँ आगे बढ़कर मोर्चा लें।

नसीम : (ईरजा खाँ से) आप भी ?

हुसैन : यह गैरइन्साफ हैं। मैं नही जाऊँगा।

ईरजा : यह शाही हुक्म है। जल्द तामील होना चाहिये।

हुसैन : ओफ ! मेरा दिमाग काम नहीं करता। मेरा दिमाग काम नहीं करता। जरा देर से भेंट कीजिये।

(माथे पर हाथ रखे प्रस्थान)

नसीम : (हँसकर) जंग के नाम से ही जनाब के होश फाख्ता हो गये।

ईरजा : अब सुनो। तुम मेरे साथ अभी ही चलो। बुड्ढा तो लड़ाई पर जायगा........

नसीम : और आप ?

ईरजा : मैं भी जाऊँगा। लेकिन उसके पहले तुम्हारे रहने का बन्दोबस्त कर दूँ।

नसीम : तो अभी चलूँ ?

ईरजा : बिल्कुल अभी ।

नसीम : अच्छा, आप जाइये । मैं पिछले दरवाजे से आती हूँ । (जाना)

ईरजा : अब क्या है ? (मूँछ पर हाथ फेरते जाना । दूसरी ओर से चिन्ताग्रस्त हुसैन खाँ का पुनः प्रवेश ।)

हुसैन : नसीम ! नसीम !! खाँ साहब ! कोई नहीं ? कहाँ गये वे लोग ? अब्दुल ! करीम ! मजीद !

नेपथ्य में : हुजूर ! हुजूर !! हुजूर !!!

हुसैन : अरे देख, कहाँ गयीं वह ?

नेपथ्य में : कौन हुजूर ?

हुसैन : वही, वही तुम्हारी मालकिन ।

नेपथ्य में : वह तो घर में नहीं हैं ।

हुसैन : क्या कहा ? घर में नहीं है ! फिर से देख । आसमान में देख, जमीन पर देख, चूल्हे पर देख, हाँड़ी में देख, सन्दूक में देख । मतलब कि कुछ बाकी न रहे । सब कुछ देख ।

नेपथ्य में : कहीं नहीं हैं हुजूर ।

हुसैन : अजीब बात है । जरूर दाल में काला है । ईरजा खाँ की चाल है । मैं छठी शादी करके पछताता हूँ । मेरी बीवी भाग गयी । जरूर भाग गयी । (रोना) ईरजा खाँ ! ईरजा खाँ !!! खबरदार !!! (प्रस्थान)

चौथा दृश्य

स्थान : कटवा का मैदान

(जंगी लिबास में तकी खाँ और ईरजा खाँ बातें कर रहे हैं । सामने तोपें सजी हैं और सैनिक तैयार हैं ।)

तकी खाँ : मिर्जा ईरजा खाँ ! तोपें सजी हैं और सिपाही तैयार हैं । इशारा पाते ही वे दुश्मनों पर चढ़ दौड़ेंगे ?

ईरजा : लेकिन क्या हमलोग फतहयाब हो सकेंगे ?

तकी खाँ : क्यों नहीं हो सकेंगे ? हमलोग अपने वतन के लिए जंग करने आये हैं । वतन के लिए लड़ना हरेक इन्सान का फर्ज है ।

ईरजा : लेकिन मीरजाफर ?

तकी खाँ : उन्हें आदमी कौन चाहता है ? जो अपने वतन से गद्दारी करे, अपने देश के लोगों को गुलाम बना दे, वह गोली मार देने लायक है । यदि मीरजाफर सामने मिल जायें तो उन्हें बतला दूँ कि उनकी सजा क्या है ।

ईरजा : लेकिन इस खून-खराबी से फायदा ?

तकी खाँ : बहादुर का खून बेकार नहीं जाता, ईरजा खाँ । वतन ने तुम्हें खून दिया है, तुम वतन को खून दो ।

ईरजा : लेकिन.......

तकी खाँ : क्या मैं समझ लूँ कि तुम्हारा खून ठंढा है ? क्या मैं समझ लूँ कि तुम नवाब के नमकहराम सरदार हो ? क्या मेरी फौज में भी मीरजाफर के दलाल घुस आये हैं ?

ईरजा : सिपहसालार साहब, आप मेरी तौहीन कर रहे हैं।

तकी खाँ : और तुम मेरी ताकत की तौहीनी कर रहे हो।

ईरजा : अच्छी बात है। मुझे माफ कीजिये।

तकी : जंगे-मैदान में ऐसी बातें नहीं होनी चाहिये। आप जाइये। देखिये, मेजर आडम्स इधर ही आ रहा है। (नेपथ्य में बन्दूकों और तोपों की आवाज। "मारो-मारो" की चिल्लाहट।)

तकी खाँ : चलिये तोपों को आगे बढ़ाइये। (दोनों का प्रस्थान दूसरी ओर से आडम्स का सिपाहियों के साथ प्रवेश)

आडम्स : फायर ! फायर !! (बन्दूकों की आवाज। तकी खाँ का सैनिकों के साथ प्रवेश)

तकी खाँ : (अपने सिपाहियों से) कैद कर डालो।

आडम्स : कमान्डर, हम भी सोर्ड चलाना जानटा।

तकी : यह बात ? लो। (तलवारें चलती हैं। ईरजा खाँ का प्रवेश। आडम्स के सैनिक तकी पर टूट पड़ते हैं।)

तकी : ईरजा खाँ ! ईरजा खाँ !!

ईरजा : क्या है ? (तकी को गोली मारता है)

तकी : (गिरते हुए) आह ! ईरजा खाँ बेईमान ! मीरजाफर का गुलाम ! मैं नहीं जानता था कि बेचारे नवाब को तुम लोग धोखा दे रहे हो। हिन्दुस्तान ! हिन्दुस्तान !! यही तुम्हारा वह लड़का है जिसको तुमने अपनी छाती पर सुलाया है। अन्न खिलाया है। पानी पिलाया है। नमकहराम ईरजा खाँ, तुमने गोरों को बुलाया है। चाटो इनके जूते। आह ! आज भाई-भाई न रहा; खून का प्यासा हो गया। ईरजा खाँ, लो, पीलो मेरी

छाती का खून। कटवा के मैदान में नवाब की हार ! नवाब की हा·····र·····!

(मृत्यु)

आडम्स : (ईरजा से) वेलडन ईरजा खाँ। (पीठ ठोकना)
(इसी समय हुसैन खाँ का पिस्तौल लिये प्रवेश)

हुसैन : कमीने ईरजा खाँ ! साहब ने तुम्हारी पीठ ठोकी। मैं तुम्हारी छाती ठोकता हूँ। (गोली मारता है। ईरजा का गिरना) दगाबाज ! ऐसे लोगों का मर ही जाना अच्छा है।

आडम्स : पकड़ो। पकड़ो। पागल ! पागल !!

हुसैन : पागल ! हाँ पागल !! पकड़ने की जरूरत नहीं है। (खुद गोली मार कर मर जाता है)

आडम्स : स्ट्रेंज मैन ! पागल आडमी।

नेपथ्य में : भागो ! भागो !! (कोलाहल तोपों और बन्दूकों की आवाज।)

(सब का प्रस्थान)

—:o:—

पाँचवां दृश्य

स्थान : मुंगेर का शाही महल

समय : रात

(सेनापति गुरगन खाँ और सौम्बर बातें कर रहे है।)

सौम्बर : कमान्डर गुरगन खाँ, टव क्या हुआ।

गुरगन : डिफीट। हार कटवा एण्ड गिरियाबोथ। लौस्ट।

सौम्बर : बोथ लौस्ट? हार कटवा गुरगन खाँ? इम्पोसिबल।

गुरगन : तकी खाँ एण्ड बद्रुद्दीन किल्ड। दोनों खटम।

सौम्बर : ओ माई गाड? नबौब सुन कर पागल हो जायगा। गुरगन! गुरगन! अब क्या होगा। हमलोगों के रहने पर भी नबौव का डिफीट? हाऊ इज इट गुरगन खाँ।

गुरगन : नेवर माइन्ड मि० सौम्बर। कुछ फिकर ने ही। हम आरमी नियम हय। हम लड़ेगा। कम्पनी से फिर जंग करेगा।

सौम्बर : जंग? ओ यस। हय फ्रेन्च। हम भी लड़ेगा। लेकिन कटवा में तकी खाँ का सौलजर्स जाड़ा ठा। फिर हार कैसे?

गुरगन : ईरजा खाँ धोखा डिया। तकी को पीछे से गोली मारा।

सौम्बर : (सक्रोध) ईरजा खाँ! अनग्रेट फुल डाग। डेस का दुशमन ईरजा खाँ।

मीरकासिम : (प्रवेश करते हुए) देश का दुशमन ईरजा खाँ ही नहीं, अनेक है सौम्बर।

(दोनों सलाम करते है)

सौम्बर : नबौव! हमको बहुट डुख। अपना राजा से डगवाजी! ईरजा खाँ रुपया का लोभ में डेश को बेचना माँगा।

मीरकासिम : बंगाल के हर घर में नवाब का दुश्मन पैदा हो चुका है। अंगरेजों ने जब मीरजाफर को फोड़ लिया जो पलासी के जंग पर अभी आंसू ही बहा रहे थे, तो औरों का कहना क्या?

गुरगन : जहाँपनाह, हम आपका एहसान नेही भूलने सकटा अपना डेश का आडमी आपको धोखा दिया। अब आप हमारालक्ष्व डेखिए। हम हिन्दुस्टानी नेही, हम आर मीनियन टिजारटवाला आडमी। लेकिन हम आपका गुलाम। हम आपके खाटिर मुसलमान हो गया। ग्रिगरी से गुरगन खाँ हो गया। हम कम्पनी का फौज का मुकाबला करने मांगटा।

मीरकासिम : गुरगन खाँ! गुरगन खाँ यकिन नहीं, अब और नहीं। मुल्क के लोगों ने धोखा दिया। गैरमुल्लकी-वालोंने भीजहर पिलाया। अब यकिन कहाँ? किस पर करें यकिन? ईरजा खाँ पर हमने यकिन किया। उसने कटवा के मैदान में तकी पर गोली चलायी। नहीं हम खुद जायेंगे। इस बार कम्पनी की फौज का मुकाबला खुद हम करेंगे। सिराजुद्दौला के खुन का बदला लेंगे।

सौम्बर : जहाँपनाह! हियर इज सौम्बर; सौम्बर यहाँ हय पहले सौम्बर मरेगा, सौम्बर का फ्रेंच फौज मरेगा टव आप। हम वह डिन भूल नहींसकटा नबौब, जब आप हमको डाकू के रूप में पकड़ा। आप चाहटा टो हमको गोली मार डेटा। हमको कैड में रखटा लेकिन आप हमको छूटी डिया, कमान्डर बनाया, हमारे सिपाही का जान बचाया। हम नमक का कीमट जान डेकर चुकाटा।

ईरवा खाँ धोखा दिया लेकिन सौम्बर का काम आप टब जानेगा? जब हम आपके खातिर जान डे डेगा या ईस्ट इण्डिया कम्पनी का झंडा आपके पैर पर लाकर रख डेगा।

मीरकासिम : सब लोगों ने तो यही कहा सौम्बर। लेकिन लफ्ज किसी ने नहीं निभाया। गिरिया में बद्रुद्दीन मारे गए। वहाँ भी उनके साथियों ने दगाबाजी की। ओह ! क्या हिन्दुस्तान की मिट्टी का यही असर है ? क्या यहाँ के नमक में दगाबाजी ही भरी पड़ी है ? मीरजाफर, ईरजा खाँ, जगत सेठ, राजवल्लभ, रायदुर्लभ सब वतन के दुश्मन निकले। वतन ने इन लोगों को बनाया। लेकिन ये शैतान बनकर वतन का गला काटने लगे। आह ! हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान····

सौम्बर और गुरगन : जहाँपनाह! हुक्म !

मीरकासिम : हुकुम ? देशी लोगों ने धोखा दिया। आज विदेशी लोग हमारे लिए मिटने को तैयार हैं। हिन्दुस्तानी, देख और मार अपने मुँह में तमाचे। गुरगन खाँ ! (जोर से गुरगन के कन्धे को पकड़कर) तुम जानते हो गुरगन खाँ कि हमने तुम्हें सौदागर से सिपहसालार बनाया। आज हमें तुम्हारी जरुरत है। बोलो तुम पर यकीन करें ? अगर तुम्हारे मन में कुछ हो (रो पड़ते हैं।) तो अभी बोल दो। बुरा नहीं मानेंगे लेकिन साथी ! पीठ में छुरा मत मारना। बोलो यकीन करें ?

गुरगन : गुरगन आपका गुलाम हय। यकीन कीजिए।

मीरकासिम : (एकाएक सौम्बर की ओर मुड़कर और वैसे ही कन्धो हिलाकर) तुम सौम्बर ! (फिर रो पड़ते हैं)

सौम्बर : जहाँपनाह ! आपका आँसू ! हमारा पत्थर का कलेजा भी इसको बर्दास्त नहीं कर सकटा। आप बहादुर नबाब।

मीरकासिम : अच्छी बात है गुरगन खाँ ! उदयनाला में जाकर पड़ाव डालो। अंगरेजों से मोर्चा लो। सौम्बर, तुम भी साथ रहो।

गुरगन : उदयनाला ! उदयनाला !! (प्रस्थान)

सौम्बर : यस, नेक्सट फाईटिंग एट उदयनाला ! उदयनाला !! (प्रस्थान)

मीरकासिम : उदयनाला ! आखिरी मोर्चा।

(जरीना बेगम का प्रवेश)

मीरकासिम : बेगम ! बेगम !!

जरीना : जहाँपनाह !

मीरकासिम : हम तुम पर भी यकीन नहीं करते बेगम।

जरीना : मुझ पर यकीन नहीं ? क्या मतलब ?

मीरकासिम : सब लोगों ने जब धोखा दिया, तो तुमसे कैसे कुछ उम्मीद रक्खें ?

जरीना : क्यों जहाँपनाह ? मुझसे क्या खता हुई ?

मीरकासिम : मीरजाफर मेरे दुश्मन हैं और तुम मीरजाफर की लड़की हो। तुम पर कैसे यकीन करें ?

जरीना : यही तो मेरे लिए सबसे बड़ा दाग है, जो लाख कोशिश करने पर भी छूट नहीं सकता। मैं वतन के दुश्मन और अंगरेजों के टुकड़े पर जीनेवाले मीरजाफर की लड़की हूँ। इनकार करने का कोई उपाय नहीं। लेकिन आलमपनाह, इसे आप जान लें कि पहले जरीना नवाब की बेगम है। बेगम के सामने लड़की की कोई कीमत नहीं।

मीरकासिम : बेगम के सामने लड़की की कोई कीमत नहीं। लेकिन बेगम की नसों में तो दगाबाज बाप का खून हिलोरें मार रहा है।

बरीना : नहीं जहाँपनाह ! वतन की पुकार के सामने वह खून दूसरा असर लायेगा।

मीरकासिम : बेगम ! हमें कुछ अच्छा नहीं लगता। मालूम होता है जर्रे-जर्रे में दुश्मन हमारे खून की प्यास में खड़े हैं।

बरीना : नवाब के घबराने से दुश्मन को मौका मिलेगा। अभी आपको जंग करके जल्द उन्हें पस्त करना चाहिये।

मीरकासिम : तुम्हारा कहना ठीक है।

बरीना : आलमपनाह, मैं वह बेगम हूँ जो इन्साफ और वतनपरस्ती का खयाल रखती है। मैं मीरजाफर को, अपने बूढ़े बाप को, जो हिन्दुस्तान की आजादी बेचना चाहते हैं, अपने सामने कैदी की हालत में देखना चाहती हूँ। खुदा से दामन फैला कर इस हवस को पूरा करने की भीख माँगती हूँ।

मीरकासिम : शाबाश बेगम ! खुदा तुम्हारी ख्वाहिश पूरी करे। अच्छा, अब तुम महल के भीतर जाओ।

बरीना : जो हुक्म। (प्रस्थान)

मीरकासिम : अब जिन्दगी में रहा क्या ? वतन के लिए लड़ेंगे। बचे तो इसे बचायेंगे, वरना---फिर क्या। अब तो सारी उम्मीदें एक ही जगह अटकी हैं। बस, वहाँ उदयनाला ! उदयनाला !! उदयनाला !!!

(आवेश में प्रस्थान)

छठा दृश्य

स्थान : उदयनाला के समीप अंगरेजों का शिविर

(शिविर के सामने राजमहल की पहाड़ियाँ दीख पड़ती हैं ! एक ओर गंगा की प्रखर धारा है। शिविर में मेजर आडम्स, मीरजाफर आदि बैठे बातें कर रहे हैं। बाहर प्रहरी पहरा दे रहा है।)

आडम्स : दिस ब्लडी उदयनाला नवीब, हम बहुत परेशान। एक महीना हो गया, बट नो फाइटिंग। कुछ लड़ाई नहीं।

मीरजाफर : एक महीने से दोनों ओर के सिपाही तैयार हैं। ताज्जुब है कि खुली लड़ाई अब तक नहीं हुई।

आडम्स : डुश्मन रोज रात को कैम्प लूट कर भागटा हय। हमारा बहुट माल लूटा गया।

मीरजाफर : न मालूम उस दल में ऐसा कौन है जो हिम्मत करके रोज रात को आकर यहाँ का माल लूटा देता है और फिर लापता हो जाता है। उन लोगों ने न मालूम किधर डेरा डाला है। कुछ पता नहीं लगता।

आडम्स : दैटस दि मेन ट्रबल रास्टा मालूम नहीं। नहीं टो हम अटैक करने सकटा। बट सारी। नो रास्टा हम आज एक काम करना मांगटा।

मीरजाफर : क्या ?

आडम्स : आप कलकटा का पिट्रूस को जानटा ? वह गुरगन खाँ का भाई हय। हम पिट्रूस के थ्रू गुरगन खाँ को मिलाने मांगटा।

मीरजाफर : इन सब बातों में आप लोगों का दिमाग बहुत काम करता है।

आडम्स : (हँसकर) नो नो, दट इज योर रांग आइडिया। पिट्रूस को हम बोलाया हुय। वह रुपया लेकर इस काम को फौरन कर डेगा। आरमीनीयन रुपया का गुलाम होटा हुय।

मीरजाफर : गुरगन खाँ माने तब तो ?

आडम्स : गुरगन विल डान्स। गुरगन नाचेगा। सब रुपया से होगा।

(पिट्रूस का प्रवेश)

पिट्रूस : पिट्रूस इज रेडी हुकुम मेजर।

आडम्स : बैठो।

पिट्रूस : वा बैठो नहीं। पिट्रूस जानने मांगटा काम—हिज डियुटी। बस टका डो, काम लो। फिनिश

आडम्स : पिट्रूस, गुरगन खाँ टुमारा भाई।

पिट्रूस : ओ यस।

आडम्स : हम टुमको प्रेसटिज डेगा, रुपया डेगा।

पिट्रूस : दैट्स गुड, बट मेरा काम ?

आडम्स : गुरगन को ब्रिटिश साइड में मिलाना। बस क्या टुम करनें सकटा ?

पिट्रूस : पिट्रूस मरा को जिन्डा नेहीं करने सकटा। वरना सब काम करने सकटा। लेकिन भारी बखशीश।

आडम्स : मिलेगा।

पिट्रूस : हमारा बाप मरने के बखट बोला कि काम करो, रुपया लो। हम एक लाख मांगटा। बस, ओनली एक लाख रुपया।

आडम्स : एक लाख ? बहुट जाडा। अच्छा। मन्जूर।

पिट्रूस : और गुरगन के लिए भी एक लाख मंजूर ?

आडम्स : ओ हीवन्स। नवीब आप क्या बोलने मांगटा ?

मीरजाफर : दो लाख बहुत ज्यादा है।

पिट्रूस : दो लाख बहुट जाडा और बंगाल का मसनद ?

आडम्स : अच्छा पिट्रूस, मंजूर।

पिट्रूस : ओ० के०। अभी काम करेगा। पिट्रूस रुपया का गुलाम। गुड बाई मेजर।

आडम्स : बाई-बाई (पिट्रूस का प्रस्थान)

मीरजाफर : यह तो बड़ा चालाक आदमी है।

आडम्स : पिट्रूस रुपया का गुलाम। अब मीरकासिम का हार नजडीक हुय। हम चला (प्रस्थान)

मीरजाफर : मीरकासिम की हार ? हाँ, मीरकासिम की हार। क्या उसकी हार मेरी जीत है ? (थोड़ी देर तक टहलते रहते हैं) यह सब क्या हो रहा है ? मेरे भीतर का शैतान फिर जाग पड़ता है। पलासी की याद अभी तक ताजी है। पलासी का खून अभी सूखने भी नहीं पाया कि फिर साजिश क्या मीरकासिम के खिलाफ यह साजिश नहीं है ? मैं बुरी तरह बँधा हूँ। कुछ कर नहीं सकता। कुछ कर नहीं सकता।

(धीरे-धीरे सोम्बर का प्रवेश)

सोम्बर : गलट। आप बहुट करने सकटा।

मीरजाफर : (साश्चर्य एवं भयभीत) तुम कौन हो ?

सोम्बर : मेरा नाम सोम्बर। हम नबीब मीरकासिम अली खाँ का एक कमान्डर हुय।

मीरजाफर : दुश्मन। मेरे खेमे में दुश्मन। तुम कैसे यहाँ आये ?

सोम्बर : नो टाईम। हम जल्डी भागने माँगटा। हम नबीब का हुकुम से आया।

मीरजाफर : मीरकासिम के हुकुम से ?

सोम्बर : यस सर। आप अगर हमारे साथ चलेगा टो वह आपको नबीब बनाने सकटा। आपके हुकुम से कम्पनी का फौज हवा में उड़ाने सकटा।

मीरजाफर : सोम्बर तुम धोखे से मेरी जान लेना चाहते हो ? इस घनी काली रात में और रोज की तरह फिर यहाँ लूटमार करने आये हो ? लेकिन आज तुम यहाँ से निकल कर भाग नहीं सकते।

सोम्बर : जनाब, हम अंगरेज का डुस्मन पर आपका डोस्ट। हम हिन्दुस्तानी नहीं, लेकिन यहाँ के मिट्टी से मुहब्बट। हम आपको इज्जट से मुर्शिडाबाड में सलामी डेगा। आप आइये।

मीरजाफर : चिकनी चुपड़ी बातों में न फुलाओ मुझे सोम्बर। (पिस्तौल ताने हुए मेजर आडम्स का प्रवेश)

आडम्स : हैंड्स अप।

सोम्बर : कौन ?

आडम्स : हम शूट कर डेगा। हैंड्स अप। जल्डी। (सोम्बर दोनों हाथ ऊपर कर लेता है)

आडम्स : सोम्बर, हमारे-कैम्प को रोज लटना आसान नहीं हुय।

सोम्बर : सोम्बर मरने से नहीं डरटा, मेजर आडम्स।

आडम्स : (मीरजाफर से) आप जाकर आराम कीजिये। डाकू को पकड़ लिया। कुछ डर नहीं। (मीरजाफर का धीरे-धीरे प्रस्थान)

आडम्स : सोम्बर, हम आपसे बाट करने माँगटा।

सोम्बर : हम टैयार। हमारा पिस्टल ले लीजिए। हाथ गिराने डीजिये।

आडम्स : राइटो। (सोम्बर की कमर से लटकती पिस्तौल ले लेते हैं। सोम्बर हाथ गिरा देता है।)

सोम्बर : अब बोलिए।

आडम्स : मि० सोम्बर, आप जानटा कि योरोप में आजकल फ्र और अंगरेज के बीच पीस हुय। फिर आप यहाँ लड़ने काहे माँगटा। हम जानटा आपको नबीब रूटी डेटा। हम भी आपको हेल्प करेगा। अभी रुपया डेने सकटा। योरोप में हम मुसलमान से हेट करटा। नफरट। यहाँ भी हम मिलकर काम करेगा। मुसलमान नबीब को क्रश करने सकटा, कुचलने सकटा।

सोम्बर : शट अप मिस्टर आडम्स। योरोप का बाट इण्डिया में मट निकालो। पहले हमको भूखा मारा, अब रुपया का हेल्प ? हम आपका मडड को नफरट करटा, ठोकर मारटा।

आडम्स : सोचिये मि० सोम्बर। हमलोग के मिल जाने पर सारा इण्डिया हमारा गुलाम हो जायेगा।

सोम्बर : अंगरेज शुरू से बेईमान। हम बेईमान नहीं। हम किसी को गुलाम बनाने नहीं माँगटा।

आडम्स : आप हमारे बाट पर सोचने नेहीं सकटा ?

सोम्बर : नेहीं, थाउज्जन्ड टाइम्स नेही।

आडम्स : रिजल्ट खराब होगा।

सोम्बर : डैम खराब।

आडम्स : हम डुस्मन को गोली मारनेवाला।

सोम्बर : शूट मी मारो गोली। सोम्बर डरटा नहीं।

आडम्स : गुड गोड ? टुम टो मोशकिल में गिरानेवाला डाकू।

सोम्बर : शट अप मेजर गोली मारो। (इसी समय नेपथ्य में गोली का शब्द और आह की चीत्कार)

आडम्स : (चौंककर) ह्वाट ? यह गोलमाल कैसा ? (पीछे की ओर घूमते हैं, सौम्बर झपट कर आडम्स के हाथ की पिस्तौल छीन लेता है। जब तक आडम्स कुछ करना चाहते हैं, तब तक सौम्बर उनके सिर के लक्ष्य पर पिस्तौल तान देता है।)

सौम्बर : हैन्ड्स अप ! जल्डी। जल्डी।

(विवश आडम्स दोनों हाथ ऊपर उठा देते हैं)

सौम्बर : हम शूट नेहीं करने माँगटा मेजर आडम्स। अपना रास्टा मांगटा। जाने डो।

आडम्स : जाओ।

सौम्बर : स्टैन्ड स्टिल। खड़ा रहो। (पिस्तौल वैसे ही ताने हुए पीछे की ओर हटता-हटता प्रस्थान। अन्त में अट्टहास।)

आडम्स : (हाथ गिराकर) भूल। भारी भूल कोई हय ?

पिट्रूस : मेजर ! मेजर !! कैम्प में डाकू।

आडम्स : पिट्रूस डाकू भाग गया। पीछा करने माँगटा।

पिट्रूस : वेरी नाइस, हम डाकू का पीछा करटा। उसका कैम्प का रास्टा पकड़टा। यू फौलो माई सिगनल। हमारा पीछे आप। जल्डी ! मेक हेस्ट।

आडम्स : ओ० के०।

(जल्दी-जल्दी दोनों का प्रस्थान। नेपथ्य में बार-बार बन्दूकों की आवाज।)

(पटाक्षेप)

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान : उदयनाला के मुगल-शिविर का एक भाग

समय : गहरी रात

(पहाड़ियों के दुर्गम स्थान में गुरगन खाँ और पिट्रूस बैठे शराब पी रहे है। नर्तकियाँ नाच रही हैं।)

—गाना—

प्रेम हिंडोले झूलो रे मन।
हसरत तेरी मिट जाये सब,
गुलशन में गुल खिल जाये सब,
नाचे मोर पपीहा रे मन॥ प्रेम॥

[नर्तकियों का प्रस्थान]

गुरगन : ब्रदर पिट्रूस। हम टुमको डेखकर खुश।

पिट्रूस : हम मिलना चाहटा। लेकिन एक काम।

गुरगन : एक काम ? उडयनाला कैम्प में एक काम ? वहुट काम मिलने सकटा।

पिट्रूस : आइ मो (ढालकर) हेव दिस पेग।

गुरगन : (लेकर और पीकर, हिचकी) वेरी स्ट्रॉंग।

पिट्रूस : यस, प्योर इंगलिस वाइन फौर यू। आपके वास्टे।

गुरगन : मेरे वास्टे ?

पिट्रूस : एक लाख रुपया ब्रदर।

गुरगन : कैसा माफिक ?

पिट्रूस : फौर यू एण्ड एलोन। सिर्फ आपके वास्टे।

गुरगन : ओह, एक लाख रुपया ?

पिट्रूस : हां, इधर आईए। कम एलांग.........

(दोनों का प्रस्थान दूसरी ओर से सौम्बर का प्रवेश)

सौम्बर : गुरगन खाँ ! गायब ! एकडम गायब ओह ! कुछ गोलमाल जरूर ?

(नशे में गुरगन खाँ का प्रवेश)

गुरगन : मि० सौम्बर ! स्ट्रौंग इंगलिश वाइन ।

सौम्बर : इंगलिश वाइन ? कहाँ मिला ?

गुरगन : पिट्र्स—माइ ब्रदर ।

सौम्बर : पिट्र्स ? कौन पिट्र्स ?

गुरगन : मेरा भाई ! मेरा भाई !!

सौम्बर : कैसे आया ? रास्टा कौन बटाया ? पिट्र्स जरूर स्पाई—अंगरेज का जासूस ।

गुरगन : नो नो नो !

सौम्बर : यह पिट्र्स अंगरेजी फौज का जासूस। ओफ ! गुरगन खाँ, सब चौपट किया, सब चौपट किया।

(इसी समय नेपथ्य में बन्दूकों की आवाज। 'दुश्मन दुश्मन' की चिल्लाहट ।)

सौम्बर : सुनो गुरगन खाँ ! अंगरेज ! अंगरेज ! ओह, नबीब मुंगेर में में हय । हम उदयनाला में हय । कैसे बन्दोबस्ट होगा ?

गुरगन : सौम्बर दुश्मन नहीं, अपना फौज । सब अपना फौज ।

सौम्बर : (गुरगन का गला पकड़कर) बेईमान ! अंगरेज का गुलाम ! नबीब का कहना ठीक हुआ । इण्डिया का मिट्टी में नमकहरामी भरा । टुम दुस्मन को बोलाया । पिट्र्स टुमको रुपया दिया । नमकहराम ! (पिस्तौल उसके सीने पर रखकर) मरो बेईमान

गुरगन : (वैसे ही नशे में) बेईमान ? हाँ बेईमान । गुरगन बेईमान । एक मिनट में हम बेईमान । मार डालो सौम्बर । हम हिंदुस्तान का दुस्मन—नबीब का दुस्मन ।

सौम्बर : (गुरगन को छोड़कर, पिस्तौल हटाकर) टुम को कैद करके नबीब के पास ले जायेगा । सेन्ट्री !

(कई सिपाहियों का प्रवेश)

सौम्बर : कमान्डर गुरगन खाँ बन्दी । मेरा हुकुम । बेईमान गुरगन ।

(गुरगन बन्दी होता है)

गुरगन : कमान्डर गुरगन खाँ बन्दी ! बेईमान गुरगन ! हाः हाः हाः पागल गुरगन !

सौम्बर : ले जाओ ।

(सौम्बर के सिवा सबका प्रस्थान)

(नेपथ्य में बार-बार तोप-ध्वनि और चिल्लाहट)

सौम्बर : आखिरी उम्मीद भी खटम हो गया । कटवा में हार, गिरिया में हार । आज उदयनाला में भी हार । सब जगह बेईमान और बेचारा नबीब का सब दुस्मन । उदयनाला ! उदयनाला इज पलासी नम्बर टू (एक ओर आवेश में प्रस्थान दूसरी ओर तेजी में आडम्स और पिट्र्स का प्रवेश)

आडम्स : फायर ! फायर !! फायर !!! (गोली दगती है)

पिट्र्स : ईनाम ! बखशीश ! एक लाख ! एक लाख !

आडम्स : ईनाम मिलेगा । लेकिन सौम्बर कहाँ ?

पिट्र्स : मेरा काम हो गया । रुपया दो ।

आडम्स : ठहरो पिट्र्स । सौम्बर को पकड़ने मांगटा । फौज को हुकुम दो । लूटो और जलाओ । खूब लूटो, खूब ! हः हः हः !!

(दोनों का प्रस्थान ।)

(दृश्य बदलता है । खेमे का जलते नजर आना । लोगों में भगदड़ और तोप-ध्वनि ।)

दूसरा दृश्य

स्थान : शाही महल

(अकेले नवाब मीरकासिम)

मीरकासिम : वहाँ, वहाँ हमारी फतह है। आसमान के उस कोने में अभी आफताब चमक रहा है। गुरगन खाँ और सोम्बर जरूर फतहयाब होंगे। उदयनाला में जरूर हमारी जीत होगी।
(बेगम जरीना का प्रवेश)

मीरका० : बेगम! खुशी मनाओ, महल सजाओ।

जरीना : क्यों जहाँपनाह ?

मीरका० : गरीबों को खिलाओ। बेगम हमारी फतह होगी।

जरीना : बिना कुछ खबर पाये कैसे कुछ किया जाए ?

मीरका० : हम कहते हैं बेगम! जरूर हमारी फतह होगी। सोम्बर और गुरगन खाँ कसम खाकर गये हैं। बहुत जल्द अंगरेजों का झण्डा हमारे कदमों पर आ गिरेगा।

जरीना : आप बहुत परेशान हो रहे हैं आलमपनाह। अन्दर आइये आराम कीजिये।

मीरका० : आराम ? अब आराम कहाँ ? आराम करने के लिए हम नहीं आये हैं। तुम जाओ बेगम। हमें सोचने दो। तुम जाओ। तुम जाओ।

(बेगम का धीरे-धीरे प्रस्थान)

मीरका० : बेचारी बेगम!

(एक नौकर आकर सलाम करता है)

मीरका० : क्या है ?

नौकर : सोम्बर साहब दरवाजे पर खड़े हैं।

मीरकासिम : कौन ? मि० सोम्बर ? भेज दो जल्दी।

(सलाम करके नौकर का प्रस्थान)

मीरकासिम : सोम्बर। हमारा प्यारा सिपहसालार !
(सोम्बर का प्रवेश। साथ में बन्दी गुरगन खाँ और सैनिकगण। सबका अभिवादन।)

मीरकासिम : यह क्या ? गुरगन खाँ कैदी ? क्या बात है।

सोम्बर : माफ कीजिये, उदयनाला हुआ पलासी। गुरगन खाँ बेईमान, इसलिए बन्दी।

मीरकासिम : (चीखकर) सोम्बर। गुरगन।

(दोनों सिर झुकाये खड़े रहते हैं।)

मीरकासिम : समझ गये हम। पूछने की जरूरत नहीं है। बताने की जरूरत नहीं है।

गुरगन : (रोकर) जहाँपनाह····

मीरकासिम : रोओ गुरगन खाँ। खूब रोओ। आज तुम रो रहे हो। नवाब रो रहा है। बंगाल रो रहा है। सारा हिन्दुस्तान रो रहा है। रोने की आवाज से कान के पर्दे फटे जा रहे हैं। (कुछ देर बाद) सोच रहे थे कि उदयनाला से तुम लोग जीतकर लौटोगे; और हम तुम लोगों का इस्तकबाल करेंगे। नहीं जानते थे कि किस्मत हमसे मजाक कर रही है। गुरगन।

गुरगन : जहाँपनाह।

मीरकासिम : याद है, तुमने जाने के पहले कसम खायी थी, यकीन दिलाया था। लेकिन तुम ही दुश्मन से जा मिले। क्या उन गोरों के रुपये में जादू होता है।

गुरगन : हम खतावार। [illegible]।

मीरकासिम : तुम्हारी गलती नहीं है। गुरगन। हवा ही ऐसी बह रही है। आह गुरगन।

सोम्बर : हुक्म नवाब।

मीरकासिम : हुक्म ? नहीं, नहीं। सोचने दो हमें। जरा सोचने दो। गिरिया कटवा, उदयनाला—सब जगह हार। गहरी हार आजादी की लड़ाई में हार। आज हिन्दुस्तान गुलाम हो गया। गुरगन में हमारे १५ हजार सिपाहियों को दुश्मनों के हाथ में डाल दिया। इसे कैद कर लो। इसे तड़पाओ, लेकिन मारो मत। इसे रुलाओ, लेकिन जला-जलाकर। इसका खून बहे, लेकिन बूँद-बूँद बनकर। इसने अनगिनत लोगों की तकदीर पर ठोकर मारी है। इसकी तकदीर को बाँध दो। इस कुत्ते को फौरन यहाँ से हटाओ।

(सोम्बर और गुरगन का प्रस्थान)

मीरकासिम : गया, उदयनाला भी गया रही-सही उम्मीद भी गई।

मीरकासिम : (टहलते रहते हैं। सोम्बर का पुनः प्रवेश)

सोम्बर : जहाँपनाह !! जहाँपनाह !!

मीरकासिम : फिर तुम ?

सोम्बर : बैड लक। मुंगेर का फोर्ट अरब खाँ रुपया लेकर, बिना लड़े, अंगरेज के हवाले किया। मुंगेर सरेन्डर्ड।

मीरकासिम : (घबड़ा) सोम्बर। सोम्बर !!

सोम्बर : कसूर माफ ! और खबर हुय।

मीरकासिम : और कौन-सी खबर है ? कहर गिरने पर और क्या हो सकता है ? बोलो सोम्बर।

सोम्बर : हमको साहस नहीं।

मीरकासिम : मेरा हुक्म है, बोलो सोम्बर।

सोम्बर : जनाब……।

मीरकासिम : बोलो सोम्बर। हमारा फौलादी कलेजा सब कुछ बर्दास्त करेगा

सोम्बर : कम्पनी का एक नोटिश पाया। (नोटिश देता है। नवाब उसे पढ़ते हैं।

मीरकासिम : (पढ़कर) मीरकासिम के सिर की कीमत एक लाख रुपये। जो मेरा सिर ले जायगा, उसे एक लाख रुपये मिलेंगे। अच्छी बात है। सोम्बर, मि० एलिस कहाँ है ?

सोम्बर : सब कैद में। सुबह चिट्ठी पकड़ा। एलिस चुपके से मेजर आडम्स के पास भेजटा ठा।

मीरकासिम : रस्सी जल गई, पर ऐंठन नहीं गई। हम उनलोगों की इज्जत करते हैं, और वे हमारे पीछे पड़े हैं। लेकिन अब हम इन जहरिले साँपों को चुन-चुन कर मारेंगे। एलिश, राजवल्लभ, जगत सेठ, गुरगन खाँ—सबको गोली मार दो। फौरन। सिराजुद्दौला के साथ सब लोग बच गये। मेरे हाथ से भी कई दफा बच गये। लेकिन अब नहीं। आज ही जहर की जड़ को काट डालो। जाओ।

(प्रस्थान। दूसरी ओर से सोम्बर का भी प्रस्थान।)

तीसरा दृश्य

(एलिस, जगतसेठ और गुरगन आदि दीन-भाव से खड़े हैं। सामने पिस्तौल लिये सोम्बर खड़ा है।)

सोम्बर : बेईमान ! ये लो ईमान !! ईनाम !!! (एक एक करके सबको गोली मारता है। 'आह' के साथ सब गिरते हैं और तड़प-तड़प कर मर जाते हैं। सोम्बर का अट्टहास।)

—:०:—

चौथा दृश्य

स्थान । दिल्ली

(मेजर आडम्स एक सरदार अमीर खाँ से बातें करते आते हैं ।)

आडम्स : वेल मि० अमीर खाँ, टुम मालामाली होने सकटा ।

अमीर : मैं अच्छी तरह जानता हूँ, कि मीरकासिम वेष बदलकर दिल्ली में हैं ।

आडम्स : डेलही में ? मटलब यहाँ । गुड ! अच्छा हुआ कि हम आ गया । हम देखना माँगटा ।

अमीर : आप सभी देख लें । देखिये सामने । वही आ रहे हैं । साथ में बेगम भी हैं । हालत दर्दनाक है ।

आडम्स ; एक आडमी और हय ।

अमीर : मैं उसे नहीं जानता ।

आडम्स : हम जानटा । सौम्बर ।

अमीर : सौम्बर कौन ?

आडम्स : अब चलने माँगटा । इस रास्टा से आने डेगा मेरा पलटन यहाँ भेज डो ! जल्डी । हम यहाँ छिपा रहेगा ।

अमीर : चलिये।

(एक ओर दोनों का प्रस्थान । दूसरी ओर से मीरकासिम, जरीना और सौम्बर का प्रवेश । अतिदीन वेश, पहिचानना कठिन' सौम्बर का दीन-भाव में कुछ काला दिखाई पड़ता फटे वस्त्र),

मीरकासिम : बेगम ! यह दिल्ली है न ?

जरीना : जी हाँ ।

मीरकासिम : इसी से यहाँ भीख नहीं मिलती । सब जगह रुपये और चेहरे की पूछ है । मुगल बादशाह शाहआलम से एक बार फिर मिलना चाहता था ।

सौम्बर : शाहआलम ? बेकार ।

मीरकासिम : सौम्बर ! उदयनाला के बाद अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल शाहंशाह शाहआलम के कहने पर बक्सर में फिर हमने लड़ाई की । पर दोनों ने दगा दिया । ऐन मौके पर दोनों छूट गये । हमारी हार हुई : और आज यह हालत है ।

जरीना : मुझ भूख लगी है । खाना····

मीरकासिम : खाना । मुंगेर कि सजे दस्तरखाना को भूल जाओ बेगम भूखी मरो, प्यासी मरो । आज मीरकासिम कंगाल है । आज बंगाल बिहार और उड़ीसा का मालिक अपनी बेगम के लिए खान तक नहीं ला सकता ।

सौम्ब : हुकुम दीजिये । मेरा फौज नहीं । लेकिन लोहे का साहस । हाथ में पिस्टल । जबर्दस्ती खाना छीनकर बेगम को खिलाने सकटा ।

मीरकासिम : बहादूर सौम्बर ! तुम्हारे एहसान का बदला हम नहीं दे सकते, नहीं दे सकता । दुनियाँ ने धोखा दिया । जहाँ हमारा यकीन था, वहाँ धोखा हुआ । जहाँ शक था वहाँ से ईमान टपका । हम इतना तक नहीं सोच सकते थे कि कोई भूखा रहकर भी हमारा गुलाम रहेगा या दुश्मन की लड़की होकर भी हमारे लिए भूखी रहेगी ।

जरीना : जहाँपनाह ! भूख लगी है । चला नहीं जाता ।

(सब बैठ जाते हैं ।)

मीरकासिम : खुदा ! यह क्या हो रहा है ? बचाओ । बेगम

अरीना : भूख । अब नहीं....अब नहीं....

(गिर जाती है । बेहोश)

मीरकासिम : आह ! बेगम ! लाचार हैं, तुम्हें बचा नहीं सकते । क्या करे.... किधर जायें ? चारों तरफ दुश्मन हैं । मरो हम भी मरेंगे ।

अरीना : प्यारे ! चली । भूख ! आह ! (मृत्यु)

मीरकासिम : (आंखों में आंसू पागल भाव) बेगम की मौत ! मीरकासिम ! बदनसीब नवाब । अब नहीं सहा जाता । जी चाहता है कि धरती की छाती को फोड़ दें । आसमान के पर्दे में छेद कर दें। खुदा के बनाये हुए कानून को तोड़-फोड़ दें । अ

(इसी समय मेजर आडम्स का सैनिकों के साथ प्रवेश)

आडम्स : (अपने सिपाहियों से) पकड़ लो ।

सोम्बर : ठहरो ।

मीरकासिम : कौन हो तुम ? इस आफत में तुम क्या करने आये हो ?

आडम्स : आप नवाब ! हम मेजर आडम्स । आप को पकड़ने मांगटा

मीरकासिम : मेजर आडम्स ! मीरकासिम को पकड़ना इतना आसान नहीं ।

(एक सैनिक की तलवार फूर्ति से खींच लेते हैं ।)

सोम्बर : मेजर । हम लड़ने को टैयार डेखो पिस्टल ।

मीरकासिम : ठहरो सोम्बर ! साहब को जरा मुझसे खेलने दो । आइये मेजर वार कीजिये ।

आडम्स : लो । (वार करता है । मीरकासिम बचा लेता है । युद्ध एक ब्रिटिश सैनिक मीरकासिम पर गोली चलाता है ।

मीरकासिम गिरते है । उसी समय गोलीमार कर सोम्बर उस सैनिक को गिराता है ।)

सैनिक : आह ! (मृत्यु)

मीरकासिम : पिस्तौल का वार ! बेईमान ! लाल खून ! मैं चला । सोम्बर । सोम्बर ।। (सोम्बर दौड़कर संभालता है) मेरे ईमानदार अकेले साथी । आह । लाल खून । प्यारा हिन्दुस्तान । (मृत्यु)

आडम्स : (अपने सिपाहियों से सोम्बर की ओर बता कर) इस डाकू को पकड़ लो ।

सोम्बर : (खड़ा होकर) दूर रहो ? वी अबे ।

आडम्स : पकड़ो ।

सोम्बर : (पिस्तौल निकाल कर) सोम्बर को कोई नेही पकड़ने सकटा सोम्बर बहादुर फ्रेंच । वह कैडी नहीं होनेवाला । नवौब हम आपके पास जायेगा । आप हमारा मालिक । (खुद गोली मारकर गिरता है ।)लाल खून । इन्डिया के खाटिर मेरा लाल खून । इन्डिया के खाटिर मेरा लाल खून। फारमिव मी गाड गुडवाई इन्डिया (मृत्यु)

आडम्स : (हाथ की तलवार फेंक कर) इन्डिया । हिन्दुस्तान ।। आज हम टुमारा कीमट जान गया । यह हमारा जीट नहीं हार । सबसे बड़ा हार । आई एम टू लेट । बहुत डेर बाड हम समझा । हीरा खोकर कीमट समझा । (सिपाहियों से) मेरा हुक्म । सब लोग इस राजा को सलामी डो । सलाम डो । आह ।

(फौजी सलामी देता है । सैनिकगण भी सलामी देते है । नेपथ्य में तोपध्वनि धीरे-धीरे यवनिका-पतन ।)

समाप्त

ये सभी नाटक (ड्रामे) कई बार सफलतापूर्वक स्टेजों पर लेखे जा चूके है। सभी सामाजिक नाटक समाज की जवलंत समस्याओं पर आधारित रोचक शैली में स्टेज पर सफलता पूर्वक खेलने योग्य है। नीचे हमारे द्वारा प्रचारित नाटकों का उल्लेख तथा सम्बन्धित विषय की लिस्ट दी जा रही है।

सतीश डे द्वारा लिखित	रमेश मेहता द्वारा लिखित
अन्धेरे-उजाले (समाजिक पाप)	ढोग (समाज पर चोट)
फिर बजेगी शहनाई (दोस्ती-दुश्मनी)	फैसला (सामाजिक)
हमारी वस्ती हमारे लोग (मद्यनिषेध)	उलझन (हास्य विनोद)
कीचड़ का फूल (अछूतोद्धार)	बाह रे इन्सान (,,)

अमर देश की अमर कहानी सिकन्दर पोरस पैदा बोलता हैं(करारी चोट)

कफन—(सिन्दुर की लाज)	पी० एन० जयसवाल
जगदीश शर्मा द्वारा लिखित	चम्बलघाटी का लूटेरा
चांदी का जुता (भ्रस्टाचार)	हथकरी खोल दो
पूजारी (पाखन्ड)	भूखा हिन्दुस्तान
ग्रेज्यूएट पागल (वेरोजगारी)	इन्तकाम
कलंक (वेश्यावृति)	हलके-आँसू वन्दूक का धूआँ
सिपाही (देश-द्रोह)	लोहा सिंह
डेढ़ रोटी (समाजिक)	प्रीतम कुमार सिंह
विधवा (,,)	गरीबी की कहानी
कन्यादान (,,)	गरीब की बीबी
फूलमाला (,,)	भूख
इन्कलाव (क्रान्तिकारी)	अँग्रेज फिर आये,

नट—आर्डर भेजते समय (२) रुपये मनिआर्डर द्वारा एडवांस भेजे सर्व प्रकार की पुस्तके वी० पी० द्वारा मगाने का

पता

प्रसाद बुक एजेन्सी ३. खजांची रोड पटना-४

५० दिनों में अंग्रेजी बोलना सिखो

अगर आप मामूली हिन्दी पढ़ना जानते हैं। तो इस किताब से ५० दिनों के अन्दर अंग्रेजी पढ़ना, लिखना और बोलना सीख जायेंगे और अंग्रेजी में बात करने लग जायेंगे। मूल्य ५) रु०

हिन्दी इंगलिश लेटर राईटिंग

प्रस्तुत पुस्तक में सभी प्रकार के सामाजिक, व्यापारिक निजी तथा कार्यालय सम्बन्धी पत्र हिन्दी तथा इंगलिश दोनों में सुन्दर ढंग से समझाये गये हैं। स्थान-स्थान पर नोट्स ने पुस्तक की उपयोगिता में चार चाँद लगा दिये गये हैं। मूल्य ५) रु०

असली बड़ा इन्द्रजाल

यह पुस्तक मुद्दत से मार्किट में नहीं मिलती थी। उनमें शंकर भगवान के कहे हुए सभी मन्त्र, तन्त्र दिये गये हैं। मूल्य १०) रु०

स्माल स्केल इन्डस्ट्रीज

(लघु उद्योग)

भारत व विदेश के अनुभवी इंजीनियरों के टेक्निकल सहयोग से लिखी हुई पुस्तक जिनमें भारत के लिए १०१ लघु उद्योग का पूरा विवरण फार्मूले, कच्चा माल व हर बात को चित्र द्वारा समझाया गया हैं। मूल्य २०) रु०

सभी प्रकार को पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगाने का पता।

प्रसाद बुक एजन्सी

: ३ : खजाची रोड पटना—४

निम्नलिखित पुस्तके घर बैठे वी० पी० द्वारा मगाये।

फिल्मीहरमोनियम मास्टर ८)
बृहद प्रेम-पत्र ८)
काश्मीरी कोकशास्त्र १०)
बाँसुरी गाइड ५)
दरजी मास्टर ७)५०
पाक विज्ञान ८)००
स्माल स्केल इन्डस्ट्रीज २०)००
काटेज इन्डस्ट्रीज १५)००
मोटर मकैनिक टीचर १२)००
मोटर ड्राइबरी १२)००
खराद शिक्षा १०)५०
वर्कशाप गाइड १०)५०
इलेक्ट्रिक वेल्डिग ८)२४
गैस वेल्डिग १२)००
भारतीय नृत्य शिक्षा १५)००
उषा बुनाई शिक्षा १८)००

मोमवती का कारोवार ५)
आतिश वाजी शिक्षा ५)
५० दिन में अँग्रेजी वोलना सिखो ६)
हलवाई मास्टर ६)
माडर्न एलौपैथिक गाइड १५)
स्टन्डर्ड ,, ३०)
माडर्न कुकरी बुक १५)
गिटार शिक्षा १०)
बैंजो गाइड ५)
होमियोपैथिक गाइड १०)
योगासन १०)
जुडो कराटे (पूराकोर्स) १५)
मोटापा घटाइये १५)
अपना कद बढ़ाइये १५)
बुनाई के ५० नमूने ८)
मेडिकलसेमा गाइड १०)

इन पुस्तकों के अलावा भारतवर्ष के प्राय: सभी प्रमुख प्रकाशकों की धार्मिक, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, उपन्यास टेक्निकल, इन्डस्ट्रीयल नाटक, नौटंकी की इत्यादि पुस्तके मिलती है।

वी० पी० द्वारा मगाने के लिए तीन रुपये अग्रिम (एडवांस) भेजे।

प्रसाद बुक एजेन्सी ३. खजांची रोड

पटना-८००००४

चतुर्भुज नाट्य साहित्य

		मूल्य
(१)	मीरकासिम (उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कृत)	३.५०
(२)	अरावली का शेर	३.५०
(३)	कलिंग विजय	३.५०
(४)	मेघनाद	३.५०
(५)	कृष्ण कुमारी	३.५०
(६)	कर्ण	३.५०
(७)	श्री कृष्ण	३.५०
(८)	सिराजुदौला	३.५०
(९)	झेलम के किनारे (एकांकी)	३.५०
(१०)	कुँवर सिंह	३.५०
(११)	भगवान बुद्ध	३.५०
(१२)	रावण	५.००
(१३)	शिवाजी	३.५०
(१४)	नुरजहाँ	३.५०
(१५)	झांसी की रानी	३.५०
(१६)	भीष्म प्रतिज्ञा	३.५०
(१७)	कंसवध	३.५०
(१८)	पाटली पुत्र का राजकुमार	३.५०
(१९)	मोर्चे पर	३.५०
(२०)	बहादुर शाह	३.५०
(२१)	विजय तिलक	३.५०
(२२)	बन्द कमरे की आत्मा	३.५०

वी० पी० द्वारा मंगाने के लिए दो रुपये (अग्रिम) एडवांस भेजें —

प्रसाद बुक एजेन्सी

खजांची रोड

पटना-४